चन्दामामा
दिसम्बर १९६२
50
NP

"We are at the cross-roads of history and we are facing great historical problems on which depends, our present and of course our future."
"No price is too great for freedom of our people and our motherland."
"I have no doubt in my mind that we shall succeed."
Jawaharlal Nehru

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

चीन ने भारत की भूमि पर दुराक्रमण किया है। हमारी सरकार इस दुराक्रमण का अपनी सैनिक शक्ति से मुकाबला कर रही है। भारत के प्रधान मन्त्री श्री नेहरु ने अपील की है कि भारत की जनता सरकार की हर तरह से मदद करे और देश की शक्ति की वृद्धि करे। तदनुसार भारत की सभी पार्टियाँ और संस्थायें सरकार की मदद कर रही हैं। कई धन, कई आभूषण, कई रक्त और कई भूमि दे रहे हैं। हमारा निवेदन है कि "चन्दामामा" के पाठक अपना योग और सहयोग इस योग्य अभियान के लिए दें।

वर्ष: १४ दिसम्बर १९६२ अंक: ४

भारत का इतिहास

पल्लवों के जानी दुश्मन थे चालुक्य। इनका प्रभाव छटी सदी में कर्नाटक देश में प्रारम्भ हो गया था। इनकी पहिली राजधानी थी, वातापि (बादामी) इनका आदि पुरुष था, पुलकेशि प्रथम। इसके लड़कों ने, प्रथम कीर्तिवर्मा और मंगलेश ने कोंकण, वैजयन्ती, दक्षिण महाराष्ट्र, माल्वा देश को जीतकर चालुक्य साम्राज्य को चारों ओर विस्तृत किया।

कीर्तिवर्मा का लड़का, द्वितीय पुलकेशी, इतिहास में प्रसिद्ध हुआ। उसने ६०९ से ६४२ तक राज्य किया। इसने सम्पूर्ण दक्षिण को जीतकर, गौतमी पुत्र शातकर्णी को मात कर दिया। हर्ष का मुकाबला किया। पल्लव महेन्द्रवर्मा का अभिमान दबाया। पिष्टपुर (पिठापुर) के राज्य को जीतकर, उसका राजा अपने भाई कुब्ज विष्णुवर्धन को नियमित किया। परन्तु उसके काल में पल्लव नरसिंह वर्मा ने उसको पराजित करके वातापि को मिट्टी में मिला दिया।

परन्तु इतने से चालुक्यों का प्रभाव कम न हुआ। द्वितीय पुलकेशी के पुत्र, प्रथम विक्रमादित्य ने अपने शत्रु पल्लवों से फिर युद्ध आरम्भ किया। इस युद्ध में और भी अधिक सफल होनेवाला था, इसका पोता द्वितीय विक्रमादित्य। इसने पल्लव राजधानी को भी वश में कर लिया। द्वितीय विक्रमादित्य के पुत्र के समय में चालुक्यों का ह्रास होने लगा और राष्ट्रकूटों का प्रभाव बढ़ने लगा। अन्तिम चालुक्य के पतन का कारण उसका सेनापति दन्तिदुर्ग ही था।

जिस राष्ट्रकूट साम्राज्य की स्थापना इसने की थी, वह महाराष्ट्र और कर्नाट

प्रान्तों तक विस्तृत हुआ। राष्ट्रकूटों ने अपने वंश के मूलपुरुष को कृष्ण के भाई सात्यकी को मानकर अपने को यादव कहा। कुछ का कहना है कि वे तेलुगु देश के रेड्डी वंश के थे। पूर्वी चालुक्यों के पत्रों से जान पड़ता है कि वे आन्ध्र देश के किसान थे। इसके भी प्रमाण मिलते हैं कि वे तेलंगाना के लट्लूर ग्राम के सरदार थे।

राष्ट्रकूट का साम्राज्य जब उन्नत था, तब उत्तर में दक्षिण गुजरात, मालवा, बाघील खंड तक और दक्षिण में तंजाऊर तक विस्तृत था। पल्लवों ने कान्यकुब्ज के सम्राट का मुकाबला ही किया था, पर राष्ट्रकूटों ने महीपाल प्रतिहार के राज्य काल में कान्यकुब्ज को घेर लिया। राष्ट्रकूटों ने यद्यपि इतना बड़ा साम्राज्य बना लिया था, तो भी उत्तरी तट पर गोदावरी और कृष्णा नदी के प्रान्तों को वे अपने वश में न कर सकें। उन पर चालुक्य वंशजों का ही आधिपत्य रहा। मान्यखेट के शासक राष्ट्रकूट राजा, वल्लभराजा का संसार के चार बड़े सम्राटों में से था। इस प्रकार अरबी लेखकों ने उसकी प्रशंसा की थी। (बाकी तीन सम्राट थे, चीन का सम्राट, बगदाद का खलीफ़ा, कस्तुन्तुनिया का सुल्तान।)

राष्ट्रकूट राजाओं ने साहित्य को प्रोत्साहित किया। प्रथम अमोघवर्ष बड़ा प्रख्यात कवि था। एलोरा में जिसने कैलाशालय बनवाया था, वह प्रथम कृष्ण दन्तिदुर्ग के पहिली पीढ़ी का राष्ट्रकूट था। जिस प्रकार चालुक्यों ने कंची के पल्लवों के साथ युद्ध किया था, राष्ट्रकूटों ने कान्यकुब्ज के प्रतिहारों से युद्ध प्रारम्भ किया। प्रथम कृष्ण का छोटा लड़का ध्रुव था। उसने

प्रतिहार वत्स राजा को पराजित किया। ध्रुव के लड़के तीसरे गोविन्द के समय राष्ट्रकूट अजेय समझे जाते थे। कंची के पल्लव उनको कर दिया करते थे। दक्षिण गुजरात में, राष्ट्रकूट के वंशजों ने राज्य किया। वत्स राजा का लड़का दूसरा नागभट था, वंग राजा चक्रायुध उनके सामने झुक गया।

८१५ से ८७७ तक शासन करनेवाले अमोघ वर्ष ने अपनी राजधानी मान्यखेट (मल्खेड़) में बनवाई। इसने गोदावरी, कृष्णा के वेन्गी चालुक्यों से भी युद्ध किया इसके परपोते तीसरे इन्द्र ने प्रतिहार महीपाल को जीतकर कान्यकुब्ज पर तात्कालिक रूप से कब्जा कर लिया।

राष्ट्रकूटों में उल्लेखनीय आखिर राजा तीसरा कृष्ण था। इसके समय में राष्ट्रकूट साम्राज्य अत्यधिक रूप से विस्तृत हुआ। ९७३ में राष्ट्रकूटों के वंश का पतन हुआ। वातापि चालुक्यों का अपने को उत्तराधिकारी बतानेवाला द्वितीय तैल, एक सामन्त था। वह ही उनके पतन का कारण बना।

यह तैल, कल्याणी चालुक्य वंश का आदिपुरुष था। इसके वंशजों ने तंजाऊर चोलों से युद्ध किया। तब चोलों का प्रभाव भी बढ़ रहा था। इसके कारण थे, राजराज चोल और उसका लड़का प्रथम राजेन्द्र चोल था। जब दक्षिण में चोल और चालुक्य लड़ रहे थे, तब उत्तर भारत में इतिहास का नया अध्याय प्रारम्भ हो रहा था। गजनी के सुल्तान मोहम्मद के आक्रमण के कारण उत्तर भारत के एक एक राज्य का पतन होने लगा।

कुमार संभव

अग्नि शिला पर जा बैठा फिर
रात दूसरी जब आयी,
रूप दूसरे मुनि की पत्नी
का धर स्वाहा आयी।

उसका मोहक रूप देखकर
अग्नि बना मतवाला,
भरा अचानक हो मदिरा से
जैसे मन का प्याला।

बाँहों में भर उसको उसने
पूछा—"अपना नाम कहो!"
'कला' बताया नाम जभी तो
कहा—"खूब है नाम अहो!"

इसी तरह बीतीं छः रातें
स्वाहा आती बनी-ठनी,
'अनुसूया' 'गति' 'हविर्भूचि' औ'
'कृत्तिका' भी वही बनी।

सप्तऋषियों की पत्नियों में
अरुंधती ही शेष बची,
जिसकी नकल बहुत की उसने
किन्तु न उसको एक जँची।

वशिष्ठ पत्नी अरुंधती को
कभी नहीं था देखा उसने,
कैसे वेष बनाये उसका
लगी इसीकी चिन्ता करने।

थककर आखिर उसी सरोवर
के तट पर जा लेट गयी,
अलसायी थी, नींद अचानक
उसे वहीं पर आ गयी।

जरा देर के बाद उठी जब
पुलक उठे सहसा मन-प्राण,
जन्म एक शिशु को था उसने
दिया वहीं, पर सकी न जान।

उठा लिया झट शिशु को उसने
उमड़ा माँ का प्यार,
ममता उर की लगी उमड़ने
बनी दूध की धार।

शिशु को दूध पिलाने को वह
हुई अभी तैयार,
तभी अचानक आयी आँधी
छाया घन अँधियारा।

लगे गरजने मेघ चतुर्दिक
बिजली लगी चमकने,
प्रलयरात्रि-सी मूसलधार
वर्षा लगी झमकने।

अपने शिशु को छिपा वक्ष में
लेटी स्वाहा वहीं रही,
झमझम करती रही रात-भर
वर्षा वह तो थमी नहीं।

लेकिन हुआ सबेरा जब तो
मिटा शोर सब अपने-आप,
चली छोड़ शिशु को तब स्वाहा
अपनी कुटिया में चुपचाप।

यक्षों का दल देखरहा था
चकित और उद्भ्रांत,
घटनाएँ सब घटीं निराली
समझ न पाये बात।

करने चर्चा लगे यक्ष सब
अद्भुत यह व्यापार,
साथ अग्नि के ऋषियों की सब
पत्नियों का वह व्यवहार!

आया करती थी स्वाहा ही
सजा भेस नित नाना,
यह न पता था उनको इससे
लगे सोचने मनमाना।

बातें फैलीं धीरे-धीरे
खड़े हुए मुनियों के कान,
पत्नियों पर क्रुद्ध हुए वे
भ्रष्टा उनको जान।

वशिष्ठ मुनि को छोड़ सभी ने
पत्नियों को दिया निकाल,
रोने-धोने लगीं विचारी
हुईं बहुत दुख से बेहाल।

बहुत सफाई दी उन सब ने
किन्तु न पतियोंने माना,
बेबस अबलाओं का तब तो
रहा न कोई ठौर-ठिकाना।

दिव्यदृष्टिवाले मुनियों का
ज्ञान कहीं था खो गया,
शंकाओं का साँप अचानक
उनके मन को डस गया।

शिशु को छोड़ वहीं पर तब वह
गयी छहों मुनियों के पास,
सभी बातें कहीं उन्हें सब
हुआ न मुनियों को विश्वास।

बोले मुनिगण क्रोधित होकर—
"करो बन्द बकवास!"
हम न सुनेंगे कुछ भी तुम से
करे कौन विश्वास।

गलती अपनी सोच वहाँ से
स्वाहा तब चुपचाप,
चली गयी घर अपने, मन में
ले भारी परिताप!

उधर सरोवर तट पर सहसा
विश्वामित्र तभी आये,
शिशु को देख कुतूहल अपना
रोक नहीं वे थे पाये।

शिशु के जाकर निकट उन्होंने
बहुत गौर से देखा।
परमेश्वर का अंशरूप यह—
ऐसा मन में लेखा।

रक्खा नाम उन्होंने शिशु का
तत्क्षण वहीं 'कुमार',
मुनियों की पत्नियाँ बहुत ही
करने लगीं दुलार।

कुमार बढ़ने लगा दूज का
जैसे बढ़ता चाँद,
हुआ सयाना जल्दी ही वह
ज्यों पूनम का चाँद।

था लगता वह भैरव-सा ही
तेजोमय अति रूप,
विश्वामित्र ने दिया उसे तब
शिव का धनुष अनूप!

[१७.]

[केशव और उसके साथी, जब नदी के पार पहुँचे, तो वहाँ गुलामों का व्यापार करनेवाले मोटे सरदार के नौकरों ने उनका मुकाबला किया। केशव और जयमल्ल उनके द्वारा पकड़े गये। बूढ़े और जंगली युवकों का कहीं पता न था। अगले दिन गुलामों को खरीदनेवाले दो व्यापारी, मोटे सरदार के डेरों के पास आये। बाद में]

मोटे सरदार ने व्यापारियों को केशव और जयमल्ल को दिखाते हुए कहा—"देखा, कैसे हैं ये मेंढ़े की तरह! नदी के पार, झरने में से वे धड़ाम से गिरे, फिर फटसे वे नदी में कूदे, फिर झटपट तैरते-तैरते घड़ी भर में इस तरफ़ आ गये। इस कोशिश में कि कहीं इनमें से किसी को चोट-चाट न लग जाये, मेरे बारह नौकर मारे गये। कितना बल है इन में, एक मुक्के से ही हमारे एक आदमी का खातमा कर दिया...."

मोटा सरदार यों बातें कर रहा था कि व्यापारियों में से एक ने उसे रोकते हुए कहा—"बस, काफ़ी है, ठहरो। कहीं एक एक के लिए दस सोने के सिक्के माँगने का इरादा तो नहीं है!"

"दस सोने के सिक्के! क्या इरादा है! मेरी लुटिया डुबोना चाहते हो!

चौबीस घंटों से मैं इनको अपने लड़कों की तरह देख रहा हूँ। इनको जो मैंने खाने को दिया है, उनकी कीमत ही तीस सिक्के होगी। क्या खाते हैं ये लोग! ताकत भी क्या गजब की है। एक फावड़ा हाथ में दीजिये, खड़े पहाड़ को तोड़कर चूरा चूरा कर देंगे।" मोटे सरदार ने जोर जोर से कहा।

व्यापारियों में से एक मुस्कराता मुस्कराता केशव के पास आया। उसने अपनी छड़ी केशव के कन्धे में भोंकी। केशव को बड़ा दर्द हुआ और गुस्सा भी आया। पर वह सब सहकर रह गया।

व्यापारी ने ज़ोर से हँसते हुए मोटे सरदार की ओर मुड़कर कहा—"इसके बारे में जो तुमने कहा है, उसमें कुछ सचाई मालूम होती है। यदि यह चोट किसी और को लगती, तो वह ज़रूर चिल्लाता।"

यह सुन मोटा सरदार बड़ा खुश हुआ। "मैंने कहा था न! एक एक को आप एक हाथी ही समझिये।"

"इतनी चोट खाकर भी इसने चूँ तक न की, कहीं यह गूँगा तो नहीं है!" कहते हुए दूसरे व्यापारी ने केशव के पास आकर कहा—"क्यों भाई, तुम बात करना जानते हो! तुम्हारा नाम क्या है?"

केशव ने अपने उबलते गुस्से को रोक कर कहा—"कहिए, जो मनुष्यों को पशुओं की तरह बेचते खरीदते हों, उनको नामों से क्या मतलब?"

"देखो, कितना अच्छा जवाब दिया है, इसने ऐसी बात कही है, जो शास्त्रों में कही जानी चाहिए थी।" मोटे सरदार ने खुश होते हुए कहा।

"जाने भी दो, तुम तो ऐसे कह रहे हो, जैसे जैसे एक एक बात के लिये एक एक सिक्का देना हो। अच्छा तो दाम बताओ। दोनों को मिलाकर, तीस सिक्के देंगे। ठीक है न?" व्यापारी ने कहा।

"दोनों को मिलाकर तीस सिक्के। मुझे बरबाद करके तुम भी क्या बनोगे? यदि मैं बरबाद हो गया, तो तुम्हारा क्या फायदा होगा? भगवान के नाम पर कहता हूँ। इन सब को पकड़ने में मेरे बारह नौकर मारे गये हैं। सच मानिये।" कहकर वह सिर पीटने लगा।

दोनों व्यापारियों ने कुछ दूर जाकर आपस में सलाह मशवरा किया।

फिर उन्होंने मोटे सरदार के पास आकर कहा—"अच्छा तो चालीस देंगे। यही आखिरी बात है। चाहो तो बेचो, नहीं तो जाने दो। हमें बहुत-से काम हैं। बीस गुलाम खरीदकर हमने पहाड़ पर नदी के पास रख रखे हैं। जल्दी जाना है।"

"यदि व्यापार इसी तरह ही रहा, तो मैं तो व्यापार कर चुका। इससे अच्छा

तो यही है कि मैं ये डेरे उठाकर किसी गुफा में नाक बन्द करके तपस्या करने लगूँ।" कहकर मोटा सरदार इधर-उधर उछलने कूदने लगा।

गुलामों का सौदा इस तरह घंटे-भर तक चलता रहा। आखिर सौदा, साठ सिक्कों पर पटा, मोटे सरदार ने व्यापारियों से साठ सिक्के लेकर, उनको पेट की थैली में खो।

"क्यों नहीं आयेंगे। क्या हमारा लेना देना, इतने से ही खतम हो जायेगा? पर हम तुम से एक मदद चाहते हैं।" व्यापारियों ने कहा।

बिच्छू ने काटा हो—"यदि मैंने अपने डेरे, नौकरों के हवाले थोड़ी देर भी छोड़ दिये, तो मेरा व्यापार चौपट हो जायेगा। सब के सब चोर हैं। मेरा बड़ा नुक्सान होगा।"

व्यापारियों ने हँसकर कहा—"आज, यदि हमारे साथ रहे, तो चार सोने के सिक्के देंगे। ठीक है!"

"क्या सोने के चार सिक्कों से ही मेरा नुक्सान पूरा हो जायेगा! दस, आठ, ठीक है क्यों! खैर, पाँच ही दीजिये। चलो, चलें।" यह कहकर, सरदार हन्टर चटकाता जल्दी जल्दी केशव और जयमल्ल के पास गया।

केशव और जयमल्ल को साथ लेकर दोनों व्यापारी और मोटा सरदार, जंगल के रास्ते, चलते चलते एक घंटा बाद एक पहाड़ी नाले के पास आये।

वहाँ तीस गुलाम जँजीरों से बन्धे हुए थे। व्यापारियों के नौकरों के पहरे में चन्दन की लकड़ियाँ काट रहे थे।

उनको देखते ही मोटे सरदार ने ज़ोर से हँसते हुए कहा—"गुलामों को खरीदने का खर्च, तो उनके काटे हुए

"क्या मदद!" कहते हुए व्यापारी ने व्यापारियों की ओर सन्देह से देखा।

"और कुछ नहीं, तुम से यह बात नहीं छुपी है कि कुछ दिनों से राज्य में अराजकता फैली हुई है। जो कोई हाथ में तलवार पकड़ सकता है, वह डाकू हो गया है और हमारे पास बहुत-सा माल यूँही पड़ा है....बत्तीस गुलाम। दो दिन के पड़ाव में हम कपिलपुर न पहुँच सकेंगे। आज रात के पड़ाव में, तुम ज़रा हमारे साथ आओ।" व्यापारियों ने कहा। मोटा सरदार इस तरह उठा, जैसे

चन्दन की लकड़ियों से ही निकल जायेगा, फिर उनको बेचकर तो कितना लाभ मिलेगा! अरे भाई, तुम भी कितने अक्लमन्द हो।"

व्यापारियों ने मुस्कराते मुस्कराते नौकरों से चलने के लिए कहा। देखते देखते नौकरों ने चन्दन इकट्ठा करवाया, उसे गट्ठरों में बांधकर, गुलामों को एक पंक्ति में चलाते और स्वयं उनके दोनों तरफ़ हन्टर घुमाते निकल पड़े।

उस घने जंगल में से, जिसमें बड़े-बड़े पेड़ थे, बड़े-बड़े झरने थे ऊँची नीची जगह थी सूर्यास्त तक चलते रहे। उनको रास्ते में शेरों का गर्जन और हाथियों का चीत्कार सुनाई पड़ने लगा। तब मोटा सरदार सोचता—"कहीं, मैंने पाँच सिक्कों के लिए अपनी जान तो जोखिम में नहीं डाल दी है!"

सूर्यास्त के बाद थोड़ी देर में ही सब जगह गाढ़ा अन्धकार फैल गया। गुलामों को एक सपाट जगह पर इकट्ठा किया। कहीं जंगली जानवर उन पर हमला न कर दें इसलिए उनसे ही चारों ओर काँटों के ऊँचे झाड़ रखवाये। तब

"उसे कोई खतरा नहीं है। इस जंगल में ही दोनों जंगलियों के साथ छुपा हुआ होगा।" जयमल्ल ने कहा।

केशव को जयमल्ल की बातों में विश्वास नहीं हुआ। वह कुछ पूछने ही वाला था कि शेरों का गर्जन यकायक रुक गया। केशव सहमकर उठा—"मल्ल, सब निश्शब्द हैं। ज़रूर कोई खतरा है!"

भयंकर गर्जन करता, एक शेर झाड़ों को पार करके अन्दर कूदा। सोते गुलाम झट से उठे और चिल्लाने लगे। मोटा सरदार और दोनों व्यापारी दबी आवाज़ में यह नौकरों से कहकर—"बाण, तलवार, भाले शेर को मारो।" स्वयं एक तरफ़ भाग गये।

नौकरों ने शेर पर बाण छोड़े। पर उसे एक भी न लगा। इतने में शेर जंज़ीरों से बंधे गुलामों पर बिजली की तरह लपका और दो तीन को अपने पंजे से घायल भी कर दिया।

केशव और जयमल्ल आग के पास गये। दो जलती लकड़ियों को लेकर उन्होंने कहा—"बाण छोड़कर शेर को मत बिदकाओ। हम उसे बाहर खदेड़ देंगे।" वे शेर की ओर भागे।

उन्होंने दो मशालें जलवाईं। फिर सबको भुनी रोटियाँ और भुना माँस खाने को दिया।

ज्यों ज्यों रात बीतती जाती थी, त्यों त्यों काँटों के झाड़ के बीच में से शेरों का गर्जन अधिक सुनाई देने लगा। केशव और जयमल्ल एक दूसरे के बगल में पड़े पड़े अपने भविष्य के बारे में सोचने लगे।

"मल्ल क्यों, क्या कहते हो! क्या हमारे पिता ठीक हैं।" केशव ने चिन्तित हो पूछा।

जलती लकड़ियों को देखकर शेर कुछ देर चौंधियाया। फिर पंजे फैलाकर, सामने खड़े केशव पर लपका। केशव ने उसके पंजे से बचकर, जलती लकड़ी उस पर फेंकी। जलती लड़की के लगते ही शेर ज़ोर से गरजकर पीछे हटा। उसी समय जयमल्ल ने अपने हाथ की जलती लकड़ी से शेर के पिछले भाग पर मारा।

शेर बिल्ली की तरह, काँटों की झाड़ी पार करके, जंगल में भाग गया। मोटा सरदार और दोनों व्यापारी, केशव और जयमल्ल के पास आये। मोटा सरदार काँप रहा था। व्यापारियों की हालत का तो कहना ही क्या!

"तुम दोनों ने हमें बहुत नुक्सान से बचाया है। दो गुलाम मर गये हैं। एक घायल हो गया है। यह कोई खास नुक्सान नहीं है। तुम्हारे धैर्य को देखकर तुम्हारी सहायता का ख्याल करते हुए, आज से तुम जितना खाने को माँगोगे, उतना दें।" एक व्यापारी ने कहा।

"तो यही करेंगे। कपिलपुर में जब हम इन्हें बेचेंगे, तो आज की घटना याद करके, अच्छा दाम पाने की कोशिश करेंगे! यदि मैं भूल भी जाऊँ, तो तुम ज़रा याद दिलाना।" दूसरे व्यापारी ने साथ के व्यापारी से कहा।

"सबने मिलकर मेरी लुटिया डुबोदी है। अगर मुझे मालूम होता कि ये इतने शूर हैं और अच्छे हैं, तो क्या मैं साठ सिक्कों में इन्हें बेचता? मेरा तो दिवाला निकल गया।" कहता मोटा सरदार, पागल की तरह चिल्लाता—इधर उधर उछलने लगा। [अभी है]

महावीर

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतार कर कन्धे पर डाल, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, यह सब मेहनत तुम किसी और के लिए कर रहे लगते हो। तब तक तुम्हें किसी का उपकार नहीं करना चाहिये, जब तक तुम्हें न मालूम हो कि वह उपकार का पात्र है कि नहीं। नहीं तो आपत्ति ही आती है। इसके उदाहरण के रूप में महावीर की कथा सुनाता हूँ।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

कभी गौड़ देश में महावीर नाम का क्षत्रिय युवक रहा करता था। उसके बल और पराक्रम की बराबरी करनेवाला कोई न था। वह जब बालक ही था, तो उसने अनेक राक्षसों को मार दिया था। उसके

पास एक अदृश्य स्फटिक था। उसे जब वह अपने सिर पर रखता, तो वह अदृश्य हो जाता, उस स्फटिक को उसे यक्षों ने दिया था।

जब वह सयाना हुआ तो महावीर ने विवाह करने की सोची। पाटलीपुत्र के राजा चित्रगुप्त के सुलोचना नाम की बहिन थी। यह सुन कि वह अतुलनीय सुन्दर थी, महावीर उससे शादी करने के लिए पाटलीपुत्र की ओर निकल पड़ा। चित्रगुप्त पहिले ही उसकी कीर्ति और प्रतिष्ठा से परिचित था, चित्रगुप्त ने महावीर को राजोचित आतिथ्य दिया। उसे जब तक वह चाहे, अपनी राजधानी में रहने के लिए कहा। महावीर इसके लिए सन्तोषपूर्वक मान गया। सुलोचना को देखकर उससे विवाह करने की उसकी इच्छा और भी प्रबल हो उठी।

महावीर पाटलीपुत्र में एक वर्ष रहा। चित्रगुप्त की उससे अच्छी मैत्री भी हो गई। तो भी महावीर अपने मन की इच्छा के बारे में उससे न कह सका। एक दिन चित्रगुप्त ने अपने मन की बात महावीर से यों कही। "ब्रह्मपुर पर यशोवती नाम की रानी शासन कर रही थी। उसका विवाह न हुआ था। उससे विवाह करने के लिए उसकी अनुमति पर कितने ही राजकुमार तैयार थे। परन्तु उसने अपने से कम बल वाले से शादी नहीं करने की ज़िद पकड़ी। जो कोई उससे शादी करने के लिए आता, वह उससे तीरन्दाजी करने के लिए कहती, गदा युद्ध करने के लिए कहती। यदि कोई हार जाता, तो वह उसका सिर कटवा देती। कितने ही बलवान उससे मुकाबला करके हार गये और जान भी खो बैठे। सिवाय उसके मैं किसी और से शादी

करना नहीं चाहता। परन्तु यदि मैंने उससे मुकाबला किया तो अवश्य हार जाऊँगा। मुझ से अधिक बलवालों को ही उसने हरा दिया है और उनको मरवा भी दिया है। इस समस्या का कैसे हल हो, मैं अभी तक नहीं जान पाया हूँ।"

चित्रगुप्त के यह कहने पर महावीर ने कहा—"मित्र! यशोवती को जीतने में मैं भरसक सहायता करूँगा। पर उसके लिए एक शर्त है, वह शर्त यह कि तुम अपनी बहिन सुलोचना का मेरे साथ विवाह करो।"

"यदि तुम मेरी बहिन से शादी करना चाहो, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु जब मैं यशोवती से सब के सामने आमने सामने खड़े होकर मुकाबला कर रहा हूँगा, तब तुम मेरी मदद कैसे करोगे? यह असंभव है।" चित्रगुप्त ने कहा।

"मेरे पास एक अदृश्य स्फटिक है। उसकी सहायता से मैं तुम्हारे पास रहूँगा और मैं अपना बल तुम्हें दूँगा।" महावीर ने कहा।

यह सुनते ही चित्रगुप्त आशा करने लगा कि यशोवती उसकी पत्नी होगी। उसने महावीर के साथ बैठकर क्या करना था, उसके बारे में भी सोचा।

"तुम अपने सामन्तों के साथ ब्रह्मपुर के लिए निकलो, मैं भी तुम्हारे साथ आऊँगा। यह कहो कि मैं भी तुम्हारा सामन्त हूँ। तब किसी को किसी प्रकारका सन्देह न होगा। कोई नहीं सोचेगा कि यशोवती को जीतने के लिए तुम एक सामन्त की सहायता माँगोगे।" महावीर ने कहा।

चित्रगुप्त ने कुछ सामन्तों और महावीर को साथ लेकर, ब्रह्मपुर जाकर रानी यशोवती के पास खबर भिजवाई और कहला भेजा कि

वह किस काम पर आया था। यशोवती ने चित्रगुप्त को प्रतियोगिता के नियम बताये। अगले दिन उससे मुकाबला करने की व्यवस्था भी कर दी।

अगले दिन चित्रगुप्त अपने साथियों के साथ प्रतियोगिता स्थल पर पहुँचा। वहाँ रानी यशोवती भी अपने आयुधों के साथ आयी। प्रतियोगिता अभी शुरु भी न हुई थी कि महावीर यह बहाना करके अपने पड़ाव की ओर चल पड़ा कि उसकी तबीयत ठीक न थी। रास्ते में एक निर्जन प्रदेश में उसने अदृश्य स्फटिक पहिन लिया। बिना किसी को दीखे वह उस जगह पर आया, जहाँ प्रतियोगिता हो रही थी। चित्रगुप्त का कन्धा सहलाकर उसने कहा—"डरो मत, ज़रूर तुम्हारी जीत होगी।"

यशोवती के पास एक दृढ़ धनुष था। उससे विवाह करनेवाले को धनुष पर बाण लगाकर, यथाशक्ति उसे खींचना पड़ता था। यशोवती के छोड़े हुए बाण से यदि मुकाबला करनेवाले का बाण ज्यादह दूर गया, तो वह जीता समझा जाता।

यशोवती ने उस धनुष और बाण को चित्रगुप्त को दिया। "आप इस धनुष

पर, यह बाण रखकर जितनी दूर छोड़ सकें छोड़िये।" उसने चित्रगुप्त से कहा।

चित्रगुप्त उस धनुष पर शायद तागा भी न लगा पाता, यदि महावीर अदृश्य रूप में उसकी सहायता न करता। जब उसने बाण रखकर तागा खींचा, तो महावीर ने भी उसके साथ खींचा। क्योंकि उन दोनों ने बाण छोड़ा था, इसलिए बाण बहुत दूर जा गिरा। यशोवती का छोड़ा हुआ बाण उतनी दूर नहीं गया। इस तरह पराजित होने पर यशोवती को गुस्सा आया और उसे अचरज भी हुआ।

फिर दोनों में गदा युद्ध की व्यवस्था हुई। इसमें भी महावीर के अदृश्य हाथ ने चित्रगुप्त के हाथ की गदा पकड़ी। क्षण में ही यशोवती के हाथ की गदा दूर जा गिरी। यशोवती पूरी तरह हार गई। सब मिलकर राजमहल में गये। महावीर सीधे उसके पास इस तरह गया, जैसे कुछ जानता ही न हो। "प्रतियोगिता पूरी हो गई! तो कौन जीता!"

"आप ही के राजा जीते हैं। मैं अपने वचन के अनुसार उनके साथ विवाह करूँगी।" यशोवती ने कहा।

ब्रह्मपुर में यशोवती और चित्रगुप्त का विवाह हो गया। चित्रगुप्त मगध और ब्रह्मदेश का भी राजा हो गया। विवाह के बाद, वह वैभव के साथ पाटलीपुत्र आया और उसने अपनी बहिन का महावीर के साथ धूम धाम से विवाह किया।

यह जानते ही कि यह विवाह होने जा रहा था, यशोवती ने अपने पति से पूछा—"क्या सम्राट के बहिन की शादी एक सामन्त से करोगे?"

चित्रगुप्त ने हँसकर कहा—"वह मेरा विश्वासपात्र मित्र भी है।"

सुलोचना ने यद्यपि महावीर को पहिली बार देखा था, तो भी उसने उसको अपने प्राणों से अधिक प्रेम किया। वह असाधारण बलशाली तो था ही, स्नेहपात्र भी था। स्वभाव से वह दूसरों की मदद भी करता था। यह सोच कि ऐसा व्यक्ति उसका पति हुआ था, सुलोचना मन ही मन गर्व करती। अपनी पत्नी की खुशी को देखकर उसने एक दिन यह भी बता दिया कि कैसे उसने यशोवती से विवाह करने के लिए चित्रगुप्त की सहायता की थी। यह सुन सुलोचना को पति पर और भी गर्व हुआ।

यह गर्व ही महावीर के लिए फाँसी का फन्दा-सा बन गया। कुछ दिनों बाद यशोवती और सुलोचना अपने पतियों के बारे में बातें कर रही थीं। यशोवती ने बातों बातों में कहा—"मेरे पति से अधिक कोई बलवान नहीं है।"

"तुम्हारा पति मेरे पति के बराबर नहीं है!" सुलोचना ने कहा।

"अरे सामन्त की तुलना तुम सम्राट से करती हो! मुझ से विवाह करने के लिए कितने ही बलवान आये और हार गये। तुम्हारा भाई ही मुझे जीतकर मुझ से विवाह कर सका।"

सुलोचना इस पर उबल पड़ी। "किसने कहा कि मेरा पति भाई का सामन्त है। यह झूट है। शायद तुम सोच रही हो कि मेरे भाई ने अपने बल के भरोसे तुम्हें जीता है। यह झूट है। क्योंकि मेरे पति ने अदृश्य होकर सहायता की थी, इसी कारण तुम हार गई थी। मेरे पति के पास अदृश्य स्फटिक है।" कहकर उसके पति ने उसे जो रहस्य बताया था, वह सब उसने अपनी भाभी को बता दिया।

यशोवती का कलेजा, मानों भभक उठा। वह सोच रही थी कि कठिन नियम रखकर उसने बलशाली पति चुना था, मगर उसके पति की बहिन ने बिना किसी नियम के उससे भी अधिक बलशाली पति पा लिया था। यह उसे सह्य न था। इसलिए उसने महावीर का सर्वनाश करने की ठानी।

उसने अपने पति से कहा—"आपके सामन्त, महावीर का व्यवहार बिल्कुल ठीक नहीं है। नीचों के मुँह नहीं लगना चाहिये। फिर आपने उसके साथ अपनी बहिन की शादी करके भी गल्ती की। वह सब से कहता फिर रहा है कि मुकाबले में आपने नहीं, उसने ही मुझे जीता था। सच कहा जाये तो मुझे उसकी पत्नी बनना चाहिये था। इस तरह की बातें हम और आप कैसे सह सकते हैं।"

चित्रगुप्त को अपनी पत्नी की बातों पर विश्वास हो गया। महावीर के प्रति उसमें जो कृतज्ञता की भावना थी, वह ईर्ष्या में बदल गई। उसने अपने सामन्तों से षड्यन्त्र करके, महावीर को छुपे छुपे मरवा दिया। महावीर ने उपकार किया था, पर उसको अपने प्राण ही खोने पड़े।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, महावीर पर जो गुज़री थी, उसका

कौन कारण था? सुलोचना जिसने अपने पति का रहस्य बता दिया था? या यशोवती, जो यह जान चुप न रह सकी कि महावीर उसके पति से अधिक बलवान था? या चित्रगुप्त, जिसने रानी की बातों पर विश्वास करके मित्र के प्रति धोखा किया? इन प्रश्नों का उत्तर तुमने जान बूझकर न दिया तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"सुलोचना के लिए अपने पति के बड़प्पन को छुपाये रखना असम्भव है। कोई भी स्त्री, जो अपने पति को चाहती है, यह नहीं सह सकती कि कोई उसके पति की अवहेलना करे, या निन्दा करे। इसलिए वह निर्दोष है। यशोवती को भी निर्दोष कहना होगा। क्योंकि उसे या तो सुलोचना के बताये हुए रहस्य को मानना होगा, नहीं तो यह सोचना होगा कि महावीर ने अपनी पत्नी को झूट बताया था। वह यह न चाहती थी कि कोई यह सोचे कि उसके पति ने उसको ठगा था। इसलिए उसने यह निर्णय किया कि महावीर ने उसके पति के बारे में गलत प्रचार किया था। अब या तो चित्रगुप्त को पत्नी को सच बताकर, उसके कोप का भाजन होना था, नहीं तो महावीर को मारकर, उसे सन्तुष्ट करना था। जिसने अन्याय करके पत्नी पाई थी, उसके लिए न्याय करना अस्वाभाविक था। सच कहा जाये तो दोषी महावीर ही था। उसे अपने रहस्य के बारे में पत्नी को नहीं कहना चाहिये था। इस तरह उसे बताकर उसने क्या पाया, सिवाय अपने प्राण खो बैठने के!"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

सिखाई हुई विद्या

बच्चे सब त्यौहार के दिन नहा धोकर, नये कपड़े पहिनकर, बाबा की प्रतीक्षा करते बैठे थे। उस दिन बाबा ने भी तेल लगाकर स्नान किया। परन्तु उसके आने से पहिले सूर्य "चन्दामामा" ले आया। जब बच्चे उसके लिए लड़ झगड़ रहे थे, बाबा आया। "लगता है, जो कहानियाँ तुम चाहते थे वे मिल गई हैं, मैं ज़रा बाहर घूम आऊँ।"

"नहीं बाबा, जाना है तो कहानी सुनाकर जाओ।" बच्चे चिल्लाये, जब बाबा जान गया कि बच्चे उसको छोड़नेवाले न थे वह आकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया। बच्चों ने उसे चारों ओर से घेर लिया।

"बाबा, मुझे भी क्या कहानी लिखाना सिखाओगे? लिखकर "चन्दामामा" में भेजूँगा।" बाबू ने कहा।

बाबा ने पोपले मुख से हँसते हुए कहा—"क्या ऐसी कहानियाँ सिखाने से आती हैं? हर किसी को अपने आप ही सीखना होता है। कहावत नहीं सुनी, सिखाई हुई विद्या और बाँधा हुआ भोजन बहुत देर काम नहीं आता?" कहकर उसने अपनी सुँघनी निकाली।

"बाबू तो ठीक तरह से अक्षर भी नहीं जानता और "चन्दामामा" के लिए कहानियाँ लिखने की सोच रहा है। उसकी बात छोड़ो, तुम हमें अच्छी कहानी सुनाओ।" सूर्य ने कहा।

"बाँधे हुए भोजन से क्या मतलब है?" छोटे ने पूछा।

"अरे, पहिले रेलें और बसें तो थीं नहीं, जो कोई यात्रा पर निकलता वह थोड़ा बहुत खाना बनवाकर ले जाता। वह

भोजन एक समय के लिए आता, नहीं तो दो समय के लिए। जो दूर जा रहे हों उनके लिए वह खाना कितनी देर आयेगा !" बाबा ने कहा।

"कहानी, कहानी, बाबा" बच्चे चिल्लाने लगे। बाबा सुँघनी निकालकर, हाथ झाड़कर सुनाने लगा।

"एक गाँव में एक लड़का रहा करता था। वह बड़ी बड़ी बातें जानकर ज्ञानी होना चाहता था। जैसे हमारे बाबू कहानियाँ लिखना चाहता है न, ठीक उसी तरह।

इतने में क्या हुआ जानते हो, उसके गाँव में एक साधु आया। यह जानकर उस लड़के ने उस साधु के पास जाकर कहा—"स्वामी, मुझे ज्ञान का उपदेश दीजिये। आपके उपदेश से मैं भी ज्ञानी हो जाऊँगा।"

साधु ने कहा—"पगले! सिखाई हुई विद्या और बाँधा हुआ भोजन कितनी दूर आयेगा! मामूली बातें कौन नहीं जानता! क्या इतने ज्ञान से ही हर कोई ज्ञानी हो जाता है!"

"स्वामी आप जो कह रहे हैं, वह मेरे दिमाग में नहीं चढ़ रहा है।" लड़के ने कहा।

"मैं इस इलाके में दो दिन रहूँगा। चाहो तो ये दोनों दिन मेरे साथ रहो। जो मैं कहना चाह रहा हूँ, शायद उसको कहने सुनने का भी मौका मिले।" साधु ने कहा।

वह लड़का, जो ज्ञानी होना चाहता था और वह साधु दिन भर साथ साथ घूमते फिरे, रात को किसी के घर के बाहर के चबूतरे पर सो रहे।

वह एक चोर का घर था। उस दिन रात को चोर चोरी पर जा रहा था तो

उसके लड़के ने कहा—"पिता जी, आप मुझे भी चोर विद्या क्यों नहीं सिखाते ? इतना सिखाने के लिए कह रहा हूँ। मैं भी चोर बनना चाहता हूँ।"

"अरे सिखाई विद्या और बांधा हुआ भोजन कितनी दूर आयेगा। चोर बनना चाहो, तो अपनी बुद्धि का उपयोग करो और अपने अनुभव से विद्या को बढ़ाओ। पिता ने कहा।

"अच्छा, तो मैं अपने अनुभव से ही चोर बनूँगा। तो मुझे भी आप अपने साथ ले जाओ।" चोर के लड़के ने कहा। पिता मान गया। दोनों मिलकर निकल पड़े।

यह सब चबूतरे पर लेटा लेटा लड़का सुन रहा था। उसने साधु से कहा—"स्वामी, यह चोर भी वे ही बातें कह रहा है, जो आपने कही थीं। देखता हूँ कि ये क्या करते हैं।" यह कहकर वह भी पिता पुत्र के पीछे निकल पड़ा।

चोर अपने लड़के को लेकर एक धनी के घर गया। उसने दीवार में सेंध लगाई। उसने अपने लड़के से कहा—"अन्दर जाओ, बीच के कमरे में सन्दूक है, उसमें गहने वगैरह हैं। इस चाबी से वह सन्दूक खोलो। जितना तुम ले सको उतना सोना ले आओ।"

पिता की दी हुई चाबी लेकर, लड़का अन्दर गया। बड़ा सन्दूक खोला, वह सन्दूक में घुस गया और सन्दूक बन्द कर लिया। सन्दूक बन्द करने में आवाज हुई। उस आवाज से दो चार की नींद टूटी। उन्होंने पूछा—"अरे यह क्या!" उनमें से एक जाकर सन्दूक पर सो गया—"अरे सवेरे देख लेंगे।" चोर का लड़का उस सन्दूक में ही फँस गया। यह बात बाहर खड़े चोर को मालूम होते ही, उसने

घर का रास्ता नापा और उस लड़के को, जो चोरों के पीछे आया था, चोर का यह व्यवहार देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह भी उसके पीछे निकला। चोर अपने घर आया। दरवाजा बन्द करके निश्चिन्त हो सो गया। उसे इस बात की बिल्कुल चिन्ता न थी कि लड़का कैसे बचकर निकलेगा।

इस बीच सन्दूक में फँसे लड़के ने क्या किया जानते हो? निश्चिन्त हो उसने जितना सोना इकट्ठा करना था, उतना इकट्ठा किया और काम खतम होते ही उसने चूहे की तरह आहट की। आहट सुनकर सन्दूक पर सोनेवाले ने "चूहा चूहा" कहते कहते सन्दूक खोला। तुरत अन्दर बैठा लड़का बाहर कूदा। सन्दूक पर से उठे आदमी को एक लात मारकर, पिता के बनाये हुए सेन्ध से निकलकर हवा से बातें करने लगा।

इस बीच घर के लोग, "चोर चोर" चिल्लाते चिल्लाते उसके पीछे भागे।

उनसे पीछा छुड़ाने के लिए जानते हो उस चोर के लड़के ने क्या किया? रास्ते में एक कुँये में एक बड़ा पत्थर

धड़ाम से गिराकर वह पासवाले पेड़ पर चढ़ गया।

अन्धेरे में पत्थर के गिरने की ध्वनि सुन, चोर का पीछा करनेवाले कुँये के पास आये। कई चिराग लाये। कई साहसी कुँये में उतरे। पर चोर का कहीं पता न था। इतना सब हुआ था और तब तक चोर घर भी पहुँच गया होगा, यह सोचकर चोर के पकड़ने का प्रयत्न छोड़कर वे सब वापिस चले गये।

फिर चोर का लड़का आराम से नीचे उतर आया। किवाड़ खट खटाकर पिता को उठाकर उसने वह सब कुछ सुनाया, जो गुज़रा था।

जो वह कह रहा था उसे साधु और लड़के ने भी सुना। साधु ने लड़के से कहा—"देखा भाई! आखिर चौर विद्या भी अनुभव से सीखनी होती है। सिखाई हुई विद्या किसी काम की नहीं होती।"

बाबा के यह कहानी सुनाते ही बाबू ने कहा—"तो मैं भी अपने आप कहानियाँ लिखकर भेजूँगा। किसी को मुझे कहानी लिखाना, सिखाने की जरूरत नहीं है।"

यह सुन सब हँसे और बाबू खौला। बाबा ने हँसते हुए कहा—"तुम्हें देखकर जगन्नाथ का लड़का वेन्कटप्पा याद आ रहा है।"

"वेन्कटप्पा कौन है बाबा। उसने क्या किया था बाबा बताओ भी।" बच्चों ने शोर किया।

"शोर न करो, सुनाता हूँ।" कहकर बाबा ने कहानी सुनानी शुरू की।

कोंटेपुर में जगन्नाथ रहा करता था। वह बड़ा धनी था। वह गाँव का मुखिया भी था। उन दिनों गाँव के मुखिया की बड़ी कद्र होती थी। गाँव में कोई झगड़ा होता, तो मुखिया से कहकर उसका निबटारा किया जाता। यदि किसी को कोई मदद की ज़रूरत होती, तो मुखिया करता। यदि किसी को कोई कष्ट होता तो मुखिया, यदि उससे बन पड़ता तो मदद करता, नहीं तो ढाढ़स बन्धाकर चला जाता।

वेन्कटप्पा ने जब देखा कि सब उसके पिता की कद्र करते थे, तो उसने भी पिता के बराबर होना चाहा। इसलिए वह पिता के साथ इधर उधर जाता और गौर से देखता कि पिता, किससे कैसे बात कर रहा था।

एक दिन गाँव में, एक का अपने दामाद से झगड़ा हो गया। दामाद ने ससुर को जली कटी सुनाई।

यह बात गाँव के मुखिया को मालूम हुई। उनका झगड़ा निबटाने के लिए जाते हुए वह साथ अपने लड़के को भी ले गया। उसने दामाद से जो कुछ कहना था, कहा। फिर बताया—"तुम्हारा ससुर अच्छा आदमी है, इसलिए अपनी अच्छाई के बारे में किसी से कुछ नहीं कहना। मैं उसको पचास साल से जानता हूँ।" इतने बड़े बुजुर्ग ने बताया था, इसलिए दामाद को पछतावा हुआ और उसने अपने ससुर से माफ़ी माँग ली।

वेन्कटप्पा, अपने पिता का बात करने का तरीका बड़े ध्यान से देख रहा था। वह उसकी नकल करने लगा। एक दिन वह गली में जा रहा था कि विश्वनाथ के घर के पास होहल्ला सुनाई दिया। हुआ यह था कि किसी ने उस घर में चोरी कर ली थी। वहाँ के नौकर पर सन्देह किया गया। और उसे खम्भे से बाँध दिया था। उसकी पत्नी ज़ोर-ज़ोर से रोकर कह रही थी कि उसके पति ने कुछ न किया था।

वेन्कटप्पा ने अन्दर जाकर ये सब बातें जानकर कहा—"मैं इसको पचास साल से जानता हूँ। अच्छा चोर है। आस पास उतना अच्छा चोर कहीं नहीं है! उसे कुछ मत कहो।"

वेन्कटप्पा की बातें सुनकर किसी ने न सोचा कि वे बहकाई हुई-सी बातें थीं। सबने प्रशंसा की—"देखा, उसने कितने कमाल से कह दिया है कि इसी ने चोरी की है। है भी तो जगन्नाथ का लड़का...."

अगले दिन जब वेन्कटप्पा चौक में आया तो वहाँ एक बछड़ा बेचा जा रहा था। लोग इकट्ठा होकर उसके दाम के बारे में बातें कर रहे थे। कई उसको देख भाल रहे थे।

वेन्कटप्पा ने वहाँ खड़े एक लड़के से पूछा—"यहाँ लोग क्यों खड़े हैं?"

"बछड़ा बेचा जा रहा है।" उस लड़के ने कहा।

तुरत वेन्कटप्पा ने भीड़ में जाकर बछड़े को देखा। वहाँ खड़े एक आदमी ने कहा—"ये सौ रुपये माँग रहे हैं। आप ही देखकर बताओ, क्या इसके इतने दाम होंगे?"

वेन्कटप्पा ने बछड़े पर हाथ रखकर कहा—"वाह, बड़ी अच्छी गौ है। आस-पास के लोग इसका ही दूध पीते हैं। मैं पचास साल से जानता हूँ। सौ रुपये तो क्या, जितने भी दिये जायें उतने कम हैं।"

सब जान गये कि वेन्कटप्पा निरा मूर्ख था। उस दिन से उसका नाम वेन्कटप्पा ही सही, पर वह निरे मूर्ख के नाम से जाना जाने लगा।

बाबा ने अभी कहानी खतम ही की थी कि भोजन के लिए बुलावा आया। "पकवान" बच्चे भी चिल्लाते उठकर चले गये।

एकता में बल है

गुलाम लड़की

[२]

एक दिन अलीशार पत्नी की बनाई हुयी कालीन का गट्ठर बनाकर उसे बेचने के लिए बाजार निकला। उसे रास्ते में एक दलाल मिला और वह कालीन बिकवाने के लिए मान गया। जब वे दुकानों के सामने भाव सौदा करते जा रहे थे, तो उनको एक ईसाई दिखाई दिया। उसने कहा कि वह कालीन साठ दीनारों में खरीदेगा। अलीशार जब साठ दीनारों में बेचने को न तैयार हुआ, तो उसने कहा कि सौ दीनारें देगा।

परन्तु अलीशार को उसे बेचना पसन्द न था। परन्तु दलाल ने उसके कान में कहा यह अच्छा भाव है, इसे न जाने दो। सच बात तो यह थी कि उस ईसाई ने पहिले ही उस दलाल को दस दीनारें घूस में दे रखी थीं और उससे भाव पटाने के लिए कह रखा था। यद्यपि जमरूद ने उससे आग्रह किया था कि किसी अनजाने को अपनी कालीन न बेचो, तो भी वह दलाल के दबाव पर अलीशार कालीन बेचने को मान गया।

पैसा लेकर अलीशार घर की ओर चला। जब उसने पीछे मुड़कर देखा, तो वह आदमी जिसने कालीन खरीदा था, उसके पीछे चला आ रहा था, उसने रुककर पूछा—"तुम्हारा यहाँ क्या काम है? क्यों इधर आ रहे हो?"

"मुझे गली के अन्त में कुछ काम है।" ईसाई ने कहा। पर जब अली अपने घर

पहुँचा, तो बगल की गली से वह भी आकर वहाँ हाजिर हुआ।

"क्यों यों मेरा पीछा कर रहे हो?" अलीशार ने गुस्से में पूछा।

"मैं सोच विचारकर तुम्हारा पीछा नहीं कर रहा हूँ। मेरा मुख सूखा जा रहा है। प्यास बुझाने के लिए कुछ तो दो।" ईसाई ने कहा।

भले ही वह कितना नीच हो, पर जब वह पानी माँग रहा हो, तो उसे मना कैसे किया जाये। अलीशार किवाड़ खोलकर अन्दर गया। फिर पानी की झारी लेकर बाहर जा रहा था कि किवाड़ खुलने की ध्वनि सुनकर जमरूद आयी—"आज इतनी देर क्यों हो गई? क्या कालीन बिकी? खरीदनेवाला कोई व्यापारी था, बेजाना या पहिचाना कोई?"

"आज बाजार में कुछ ज्यादह भीड़ थी, इसलिए देरी हो गई। कालीन मैंने एक अजनबी को ही बेच डाली।" अलीशार ने कहा।

"यह पानी किसके लिए?" उसने फिर पूछा।

"दलाल के लिए। वह मेरे साथ आया है।" कहकर अलीशार बाहर गया।

परन्तु गुलाम लड़की के मन में कुछ सन्देह होने लगा। उसे लगा कि कोई आपत्ति आनेवाली थी।

ईसाई गली में न खड़ा रह सका, वह दरवाजे से अन्दर आ गया।

"चोर कहीं के। बिना मेरी इजाज़त के मेरे घर में कैसे घुसे?" अलीशार ने उसे धमकाया।

"मैं खड़ा भी न रह पाया। इसलिए अन्दर चला आया। यह तो सहन ही है, घर नहीं न है। एक क्षण आराम करके मैं अपने रास्ते चला जाऊँगा।" ईसाई ने

प्याज दे दो, मैं अपनी भूख मिटा लूँगा।" ईसाई ने कहा।

"हमारे घर में इतना खाना भी नहीं है। जाओ, चुपचाप यहाँ से चले जाओ।" अलीशार ने कहा।

तब भी ईसाई नहीं हिला। "घर में कुछ नहीं है तो बाज़ार से कुछ लाकर दिल्वाइये। नहीं तो अल्लाह की कसम। मैंने कालीन के लिए जो सौ दीनारें दी थीं, वे अभी आपके पास ही हैं। भूखे को यों दुत्कार कर भगादेना भला आपको भी क्या शोभता है?" उसने कहा।

उस दुष्ट पर अलीशार को बड़ा गुस्सा आ रहा था, तो भी उसको उसकी इच्छा पूरी करनी पड़ी। उसने ईसाई को सावधान कर दिया कि उस जगह से वह कहीं न हिले और किवाड़ पर ताले लगाकर दुकान पर गया और गरमागरम रोटियाँ, हलवा और फल आदि खाने की चीज़ें ले आया।

यह सब देख ईसाई ने कहा—"वाह, कितना अतिथि सत्कार! ये सब क्यों लाये! इससे तो दस आदमी दावत कर लें। आप भी मेरे साथ भोजन कीजिये।

कहा। उसने अलीशार के हाथ से झारी ले ली। पानी पीकर अलीशार को झारी वापिस कर दी। अलीशार ने सोचा कि ईसाई चला जायेगा, पर वह वहाँ से न हिला।"

"अब जाओ।" अलीशार ने कहा।

"हुज़ूर, एक छोटा-सा उपकार किया गया तो उसका लाभ बरसों चलता रहता है। क्या ऐसे काम करने की बुद्धि अल्लाह ने आपको नहीं दी है? मेरी प्यास तो बुझ गई है, परन्तु भूख नहीं मिटी है। एक रूखी सूखी रोटी दे दो और छोटी-सी

यह मेरी प्रार्थना है।" वह अलीशार को मनाने लगा।

दोनों भोजन के लिए बैठ गये। खाते खाते, ईसाई ने एक केले में बेहोशी की दवा रखकर कहा—"आपको फल मेरे हाथ से खाना चाहिए।" उसने उसके मुख में केला रखा। अलीशार केला खाते ही बेहोश हो गिर पड़ा।

तुरत ईसाई उठकर गली में गया। तब तक वहाँ उसके आदमी एक खच्चर लेकर हाज़िर थे। उसके साथ बूढ़ा रशीद अल्दीन भी था। इसी बूढ़े ने जमरूद को खरीदने की कोशिश की थी। यह वस्तुतः ईसाई था। कहीं वह व्यापारियों में अलग न रह जाये, इसलिए वह अपने को मुसलमान कहता आया था। वह ईसाई उसका अपना भाई ही था। उसका नाम था बर्सूम।

बर्सूम ने अपने भाई से अपनी चाल के बारे में पूरी तरह कहा। भाई और उनके आदमी, अलीशार के मकान में जा घुसे। वे जमरूद के पास गये। उसके मुख में उन्होंने कपड़े ठूँस दिये। उसे खच्चर पर बिठाकर सीधे बूढ़े रशीद के घर ले गये। बूढ़े ने उसको अपने घर के कोने के कमरे में ले जाकर, उसके मुख से कपड़े निकालकर, उससे कहा—"अब तुम मेरे हाथ आयी हो जमरूद। देखता हूँ कि वह अलीशार अब तुम्हें कैसे ले जाता है। तुम्हें अब मेरा होकर रहना ही होगा। इसलिए तुम अपना मज़हब छोड़ दो और मेरी तरह ईसाई मज़हब अपना लो। नहीं तो तुम्हारी बोटी-बोटी कटवा दूँगा। तुम्हें कुत्ते भी नहीं ताकेंगे।"

जमरूद एक तरफ़ लगातार रोती जाती थी और दूसरी तरफ़ उसे दुत्कारती जाती थी—"बूढ़ा कहीं का, यदि तुमने मेरी

बोटियाँ भी काट डालीं, तो भी मैं अपना मज़हब न छोड़ूँगी।"

इस पर वह बूढ़ा उसे तब तक पीटता रहा, जब तक उसके हाथ दुखने न लगे। "इसे रसोई के गुलामों में मिला दो। इसे न खाने को दो, न पीने को ही।" उसने नौकरों से कहा।

*　　*　　*

उधर अलीशार को थोड़ी देर बाद होश आया। वह उठकर चिल्लाया "जमरूद" परन्तु उसे कोई जवाब नहीं मिला। जब वह उठकर उसके कमरे में गया, तो वहाँ उसकी बुनने की चीज़ें, रुमाल आदि बिखरी पड़ी थीं। यह देखते ही उसको वह ईसाई याद हो आया। यह सोच कि वह उसकी प्रेयसी को उठा ले गया था, उसे बड़ा दुःख हुआ। उसे इतना दुःख हुआ कि वह पगला ही गया। "हाय जमरूद" वह छाती पीटता-पीटता गली में निकल पड़ा। जल्दी ही बहुत-से लड़के "पगला, पगला" चिल्लाते-चिल्लाते उसके पीछे लग गये। उसको जो जानते थे, उन्होंने कहा—"बिचारा, लगता है पागल हो गया है।" उनको उस पर तरस आया।

इस तरह जब वह गली-गली फिर रहा था, तो उसको एक बुढ़िया दिखाई दी। "अरे बेटा, तुम्हारी यह हालत कैसे हो गई!" उसने पूछा।

अलीशार ने उसको अपनी कहानी सुनाई। उस बुढ़िया ने काफी देर सोचकर कहा—"देखो, बाज़ार जाकर, वे चीज़ें जो स्त्रियाँ खरीदती हैं—चूड़ियाँ, चान्दी पुती अंगूठियाँ, बालियाँ एक थाल में रखकर ला सकते हो! उस थाल को सिर पर रखकर, मैं गली-गली फिरूँगी और मालूम करने की कोशिश करूँगी कि तुम्हारी जमरूद कहाँ है!"

यह सुन अलीशार की जान में जान आयी। उसने खुशी के आँसू बहाये। उसके हाथ अपनी आँखों पर लगाये, फिर वह बाज़ार जाकर, उसकी माँगी हुई चीज़ें एक थाल में रखकर ले आया। वह घर गई, कपड़े बदलकर, मुख पर बुरका डाल, सिर पर थाल रखकर, लाठी टेकती-टेकती शहर के सब बड़े-बड़े व्यापारियों के घर गई और सब स्त्रियों को देख आने लगी।

आखिर वह रशीद के घर भी गई। वह जो चीज़ें बेचने के लिए लाई थी,

इसलिए बुढ़िया ने उसके पास आकर कहा—"तुम अलीशार की गुलाम हो न! उसने मुझे तुम्हारे लिए भेजा है। कल शाम को अन्धेरा होने के समय रसोई की खिड़की के पास खड़े हो जाना। जब गली में से सीटी सुनाई दे, तो तुम भी सीटी बजाना और बाहर चली आना। वह तुम्हारी इन्तज़ार कर रहा होगा।"

इसके बाद बुढ़िया अलीशार के पास गयी। "कल अन्धेरा होने के समय, फलां खिड़की के नीचे, गली में खड़े हो जाओ।" फिर उसने उसको बताया कि उसको क्या क्या करना था। अलीशार ने उसके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की और कुछ ईनाम देने ही वाला था कि बुढ़िया ने न लिया। "यदि तुम्हारा काम बन जाये, तो वही मेरे लिए ईनाम है।" यह कहकर वह घर चली गई।

अगले दिन अन्धेरा होने के समय अलीशार, रशीद के रसोई की खिड़की के नीचे, दीवार के सहारे इन्तज़ार करता बैठ गया। पर चूँकि वह दो दिन से सोया न था, इसलिए वह सो गया।

उस समय एक डाकू वहाँ आया। उस दिन रात को, वह उस घर में चोरी करना

उनको खरीदने सब गुलाम स्त्रियाँ आयीं। उसने उनको सब चीज़ें केवल दिखाई ही नहीं, बल्कि सस्ते दाम भी बताये। सबने अपनी अपनी इच्छा की चीज़ें खरीद लीं।

बुढ़िया ने जब चारों ओर मुड़कर देखा, तो उसको एक चटाई पर चोटों के दर्द से कराहती जमरूद दिखाई दी। उसे तुरत लगा कि वह उसे ही खोज रही थी—क्योंकि जो कुछ और गुलाम स्त्रियों ने उसके बारे में बताया था और जो अलीशार ने उसके बारे में जानकारी दी थी, वह बिल्कुल मिलती जुलती थी।

चाहता था, इसलिए घर देखने आया था। उस तरफ़ आते ही उसने अलीशार को सोते हुए देखा। उसके कीमती कपड़ों पर उसकी नज़र गई। उसने होशियारी से अलीशार की पगड़ी, कपड़े आदि उतार लिये और स्वयं पहिन लिये।

इसी समय ऊपर की खिड़की खुली। चोर को एक स्त्री दिखाई दी। उस स्त्री ने नीचे देखकर सीटी बजायी। फिर अन्दर से खिड़की में से एक रस्सी नीचे फेंकी गई। वह स्त्री उस रस्सी के सहारे नीचे उतरी। चोर ने आगे पीछे न देखा। उसके उतरने के लिए अपनी पीठ दी। क्योंकि वह बलवान था, इसलिए उसको पीठ पर उठाकर वह जोर से भागने लगा।

चोर को देखकर जमरूद ने सोचा कि वह उसका पति ही था। उसने चोर से कहा—"बुढ़िया ने कहा था कि तुम में चलने की भी शक्ति नहीं है। अब तुम में घोड़े की तरह भागने की शक्ति कहाँ से आ गई है!" यह सुन चोर ने अपनी चाल और भी तेज़ कर दी। जमरूद को सन्देह हुआ, उसने चोर का मुँह सहाला। उसकी दाढ़ी, झाडू की तरह उसके हाथ में लगी। "अरे, तुम कौन हो!" कहकर, वह उसके मुँह पर मारने लगी।
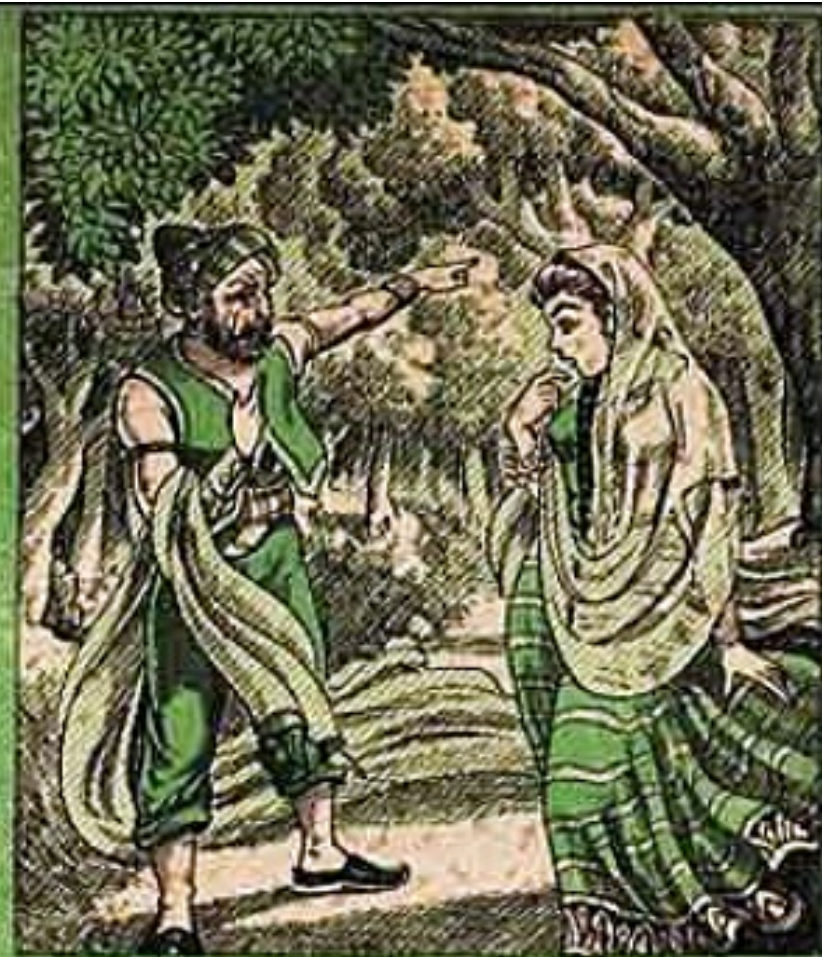
तब तक चोर ऐसी जगह पहुँच गया था, जहाँ कोई न था। उसने जमरूद को उतारकर कहा—"मैं कौन हूँ! मेरा नाम जगन है। मैं चोर हूँ। हमारे गुट में चालीस आदमी हैं। हम में कोई स्त्री नहीं है। तुम्हारा सौभाग्य है। तुम हम सब की पत्नी होने जा रही हो।"

यह कहकर, उसने उसको फिर अपनी पीठ पर चढ़ा लिया और पहाड़ों में ले गया, जहाँ उसके गुट के आदमी रहा करते थे।

जगन ने जमरूद को एक बुढ़िया को सौंपते हुए कहा—"आज रात को हमें कुछ चोरियाँ करनी हैं। कल दोपहर तक हम चालीस वापिस आ जायेंगे। तब तक तुम इसको ज़रा होशियारी से देखते रहना।"

उस दिन रात को जमरूद सो न सकी। सवेरा होने तक उसका भय जाता रहा। उसमें कुछ धीरज भी गया। वह वहाँ से भाग निकलने की सोचने लगी।

उसने बुढ़िया से कहा—"वे कल दोपहर तक तो आयेंगे नहीं। तब तक हमें कोई काम नहीं है। आओ, ज़रा धूप में बैठ जायें, तुम्हारे सिर की जुंये निकालूँगी।"

बुढ़िया ने कहा—"और क्या चाहिए! इस मनहूस गुफ़ा में न नहाना है, न धोना है। सिर में जुंये ही जुंये हैं। रात में सारे बदन पर चलती फिरती हैं। यदि तुमने जुंये निकाल दीं, तो तुम्हें खूब अच्छी तरह देखूँगी।"

दोनों धूप में पहुँचीं। जमरूद ने बुढ़िया के बालों में कंघी चलाकर बहुत-सी जुंये निकाल दीं। फिर वह बाल बनाती, नाखून से जुंये मारने लगी, इस तरह शब्द हुआ कि बुढ़िया को लगा कि कोई लोरियाँ गा रही हो, उसे नीन्द आ गई।

जमरूद बुढ़िया को छोड़कर जल्दी जल्दी गुफ़ा में गई। अन्दर कितनी ही तरह की पोषाकें थीं। उन्हें चोर चुराकर लाये थे। जमरूद ने मर्दों की पोषाक पहिन ली। सिर पर कीमती पगड़ी भी बाँध ली। बाहर आयी। वहाँ बँधे एक घोड़े पर सवार हो गई। खुदा का नाम लेकर वह बाण की तरह निकल गई।

[अभी है]

नौकर के नियम

गोल मटोल भीम, जमीन्दार की लड़की से विवाह करके बड़ा हो गया था। जमीन्दार ने सोचा कि अच्छा होगा यदि कोई नौकर हो, जो उसके दामाद का सब कुछ काम देख भाल सके। जमीन्दार का मुनीम दामाद के लिए दस बारह वर्ष का लड़का पकड़ लाया। यह तय हुआ कि उसे सालाना कुछ वेतन और एक जोड़ा कपड़े दिये जायें।

एक दिन शाम को जब भीम अकेला बाग में था, तो उस नौकर के पिता ने आकर कहा—"बाबू, मेरे लड़के को ही आपका नौकर बनाया गया है। मैं जानता हूँ कि कपड़े खाने की उसे कोई दिक्कत न होगी। तनख्वाह भी मिलेगी। पर दो बातें आपसे कहना चाहता हूँ।"

"हाँ, ज़रूर कहो।" भीम ने कहा।

"पर हर शनिवार उसका अभ्यंगन किया जाना चाहिये।" नौकर के पिता ने कहा।

"अभ्यंगन का मतलब क्या है?" भीम ने पूछा।

"तेल लगाकर नाहना। मैं आपसे इसलिए यह बात कह रहा हूँ क्योंकि वह तेल देखते ही भाग जाता है। इसलिए अगर जबर्दस्ती भी करनी पड़ जाये, तो भी उसे तेल स्नान करवाइये।" नौकर के पिता ने कहा।

"हाँ, हाँ, तो ऐसा ही होगा।" भीम ने कहा।

"एक और बात, उससे एक बार महीने में बाल बाल भी कटवाइये। यही दो बातें

मैं आपसे कहना चाहता था।" नौकर के पिता ने कहा।

भीम दोनों के लिए मान गया। उसे यह कहकर भेज दिया कि याद करके उसके लड़के से वह ज़रूर करवायेगा। क्योंकि उस आदमी ने स्वयं केवल उससे ही ये बातें कही थीं इसलिए उसने सोचा उसे स्वयं उसके लड़के से यह करवाना था। भीम इस प्रतीक्षा में रहा कि कब शनिवार आता है।

शनिवार भी आया। भीम ने सवेरे उठते ही अपने नौकर को बुलाकर कहा—

"अरे जाओ, कोल्हू के पास जाकर एक डब्बा तेल ले आओ।

"जमाई साहब ने मँगाया है, नहीं मालूम क्यों?" तेली से कहकर नौकर एक डिब्बा तेल ले आया और उसे उसने भीम के सामने रखा।

भीम अपने नौकर को गुसलखाने में ले गया। उसे उसने हौज़ में खड़े होने के लिए कहा। फिर उसके सिर पर उसने डिब्बा भर तेल उड़ेल दिया। वह लड़का जोर जोर से रोने लगा।

"यदि चिल्लाये, तो जान निकाल दूँगा। तेरी सब बातें तुम्हारा पिता मुझे पहिले ही बता गया है। भले ही तुम रोओ, चिल्लाओ, हर शनिवार को तुम्हें तेल से नहाना ही पड़ेगा। तुम्हारे पिता ने कहा है तेल में भीगना अच्छा है। इसलिए जब तक मैं नहीं बुलाऊँ, तब तक बाहर न आना।" भीम ने उस लड़के को डाँटा डपटा और दरवाज़े बन्द करके चला आया।

लड़का अन्दर जोर जोर से चिल्लाने लगा।

ठीक उसी समय भीम की पत्नी महालक्ष्मी उस तरफ़ आयी। "क्यों, आपका नौकर यों रो रहा है? उसको कमरे में बन्द

क्यों कर दिया है? क्यों, उसने क्या किया था?"

"इस बात का तुमसे कोई वास्ता नहीं है। उसका पिता स्वयं मुझे यह जिम्मेवारी दे गया है। उसने कहा था कि चाहे वह कितना भी रोये, उसको हर शनिवार तेल से निहलाया जाय। कहते हैं यह ही "अभ्यंगन" होता है।" भीम ने कहा।

महालक्ष्मी और सब घरवाले जान गये कि भीम ने नौकर के सिर पर तेल उड़ेल दिया था। सब चकित थे कि जमाई ने यह काम क्यों किया था। महालक्ष्मी ने उससे कहा—"उन्हें गुस्सा आ गया और उन्होंने डब्बा भर तेल उसके सिर पर उड़ेल दिया। क्योंकि हर शनिवार को उन्हें तेल से नहाने की आदत है और हमारे यहाँ किसी को यह आदत नहीं है। इसलिए वे गुस्सा हो गये। अच्छा होगा यदि हम सब भी यदि हर शनिवार को तेल से नहाने की आदत डाल लें।" इस तरह उसने अपने पति की बेअक्ली ढक दी। क्योंकि यह व्यवस्था नौकरों के लिए भी की गई थी, इसलिए भीम को इस नियम के बारे में सजग रहने की आवश्यकता जाती रही।
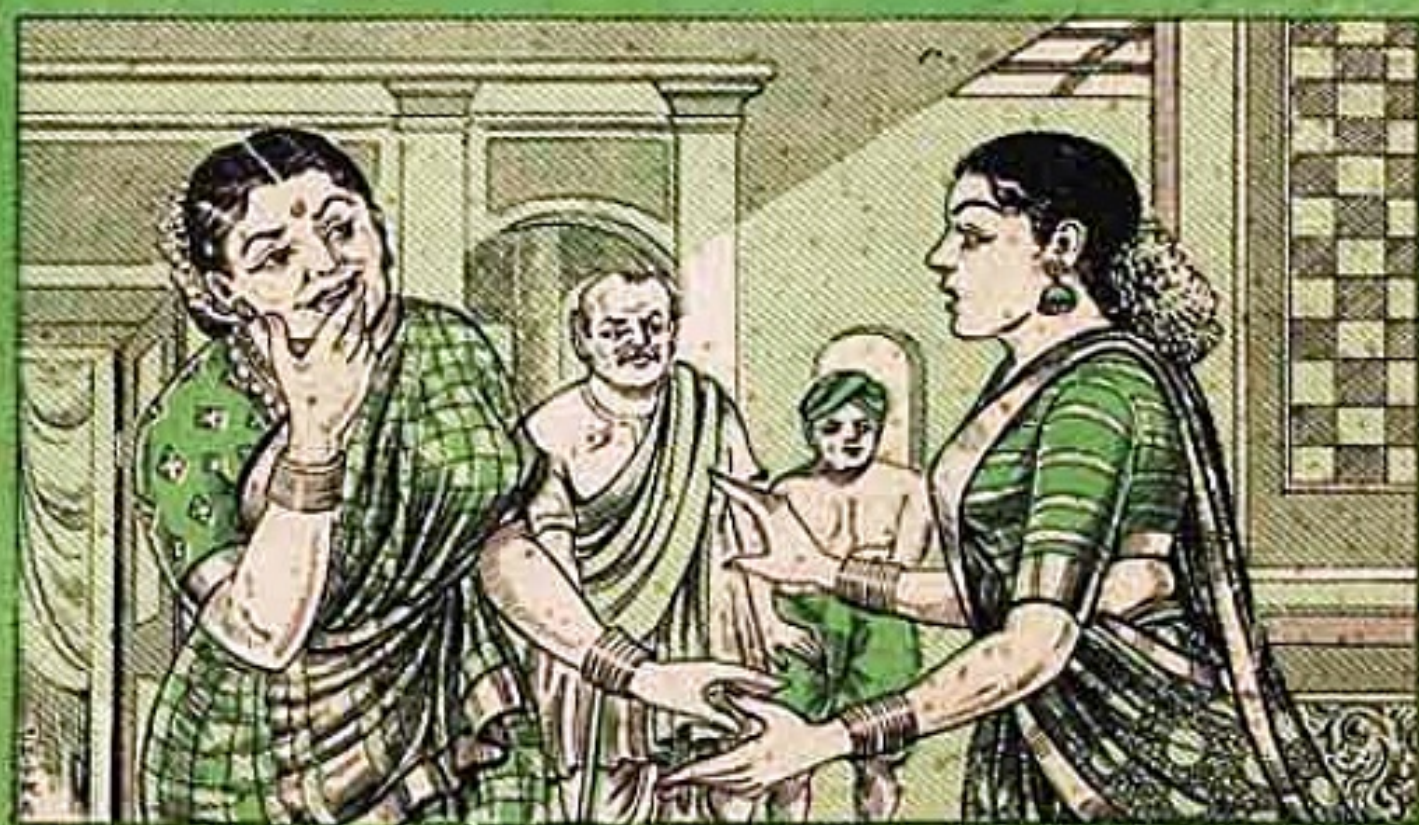
परन्तु दूसरा नियम अभी बाकी था। भीम ने महीना पूरा होने दिया। फिर नौकर को बुलाकर कहा—"अरे भाई, पूछकर आओ, कौन कौन हजामत करवाना चाहता है।"

नौकर ने जाकर बाकी नौकरों से पूछकर आकर बताया—"सब ने करवा ली है।"

"अच्छा, तो खैर, मैं ही करवाऊँगा। तुम अपना उस्तरा ले आओ।" भीम ने कहा।

"मेरे पास उस्तरा नहीं है।" नौकर ने कहा।

"तुम्हारे पिता ने कहा है कि महीने में तुम्हारे बाल एक बार कटवाये जायें। तब तुम्हें उसने उस्तरा क्यों नहीं दिया? तो घर जाकर उस्तरा लाओ और मेरी हजामत करो। यह एक नियम है। मैंने तुम्हारे पिता को वचन दिया है।"

"पर मैं तो हजामत करना नहीं जानता हूँ।" लड़का गिड़गिड़ाने लगा।

"नहीं जानते हो, तो सीख लो। तुम बड़े ढीट मालूम होते हो। तुम्हारा पिता चाहता है कि तुम अच्छे नाई बनो और तुम कहते हो कि तुम जानते नहीं हो।"

फिर महालक्ष्मी वहाँ आयी। उसने सारी बात सुनी। "उसके हाथ में दो आने रखिये, वह जाकर बाल बनवा लेगा। उसके पिता ने आपसे इतना ही तो चाहा था।"

"उससे हजामत करवाने का मतलब, उसको दो आना देना था, यह भला मैं कैसे जान सकता हूँ। जो कुछ माँगना है, वह ठीक ठीक क्यों नहीं माँगते!" भीम गुन गुनाया।

[एक और घटना अगले मास]

लहरों का मुन्शी

उन दिनों ब्रिटिश सरकार नई-नई थी। कामशास्त्री ब्राह्मणों के ग्राम केरटा (लहर) का मुन्शी था। कामशास्त्री मामूली आदमी न था। बड़ा चालाक था। रिश्वतें लिया करता। हर किसी से लेता। किसी का लिहाज न करता। उस गाँव में एक कलेक्टर भी की कुछ भूमि थी। उसने उस भूमि का कर चुकाने के लिए कुछ रुपये भेजे। मुन्शी ने यह कहकर वह रकम वापिस कर दी कि यदि उसका मामूल यानि घूस न दी गई, तो वह उसे जमा न करेगा। कलेक्टर ने बहुत कोशिश की, पर कुछ फायदा न हुआ।

उसी समय गाँव के लोगों ने एक फरियाद की—"यह मुन्शी घूँस लेता है। हम इसके मारे तंग हैं। फरियाद रिवेन्यू बोर्ड के बड़े-बड़े अफसरों के पास गई। एक प्रति लन्डन के प्रिवी कोन्सिल के पास भी भेजी गई।

इस तरह के आदमी से तहल्का मच सकता है इसलिए यह निर्धारित करने के लिए कि उसको क्या सज़ा दी जाये, एक कमेटी बिठायी गई। यह निर्णय किया गया कि एक साल तक महासमुद्र में एक द्वीप में उसे छोड़ दिया जाये और एक वर्ष तक, जितनी रसद ज़रूरी हो, उसे दे दी जाये। यह निर्णय जब भारत के गवर्नर के पास पहुँचा, तो मुन्शी को भी सूचना मिली। उससे कहा गया कि ज़रूरी रसद के लिए वह दर्ख्वास्त दे। मुन्शी ने और चीज़ों के साथ दस रीम कागज़, स्याही, कलम, पेन्सिलों की भी अर्ज़ी दी। जब यह सूची

रामधन

मिली, तो अधिकारियों ने वे सब चीज़ें दे दीं और उससे स्टीमर पर चढ़वा दिया।

मुन्शी जब द्वीप में पहुँचा, तो उसने कागज़ों की कापी बनाकर, उसकी जिल्द बाँध ली, फिर उन पर लकीरें खींचकर, उन पर लिखने लगा। दस लहरें तट तक आयीं, उनमें से आठ वापिस चली गई—इस प्रकार वह जैसा जी में आता लिखता। कापियाँ भरती जाती थीं। इतने में ईस्ट इन्डिया कम्पनीवालों का जहाज़ उस द्वीप में आया। मुन्शी ने उसे रोका, सौ रुपये की रसीद देकर, उसने चीज़ें लाने के लिए कहा। स्टीमर के अंग्रेज़ ने पूछा—"यह रसीद क्या है ? तुम कौन हो ?" "जब तक ये दे नहीं देते, स्टीमर बन्दरगाह से नहीं हिल सकता। मैं तरंगों का मुन्शी हूँ! ये देखो मेरे रिकार्ड की पुस्तक।" मुन्शी ने कहा।

अंग्रेज़ ने सौ रुपये देकर, रसीद के पीछे लिख दिया। "लहरों के मुन्शी को दी गई रकम।" इसके बाद उस तरफ़ से जो जहाज़ गुज़रता, मुन्शी उससे सौ रुपये वसूल करता। उसने जो रसीदें दी थीं, वे सब इन्गलेन्ड में मुख्य कार्यालय में पहुँचीं। वहाँ आडिटरों ने आपत्ति की कि ये सब लिखी रसीदें हैं। छपी रसीदें कहाँ हैं—नहीं तो हिसाब ठीक नहीं होगा, यह उन्होंने भारत लिख भी भेजा। यह पत्र ज़िला कलेक्टर के पास पहुँचा। आखिर पूछताछ करने पर मालूम हुआ रसीद देनेवाला वह कामशास्त्री ही था, जो रिश्वतखोरी के लिए समुद्र के एक द्वीप में सज़ा भुगत रहा था। इतना समर्थ व्यक्ति है, यह सोच सरकार ने तय किया कि जो कुछ मुन्शी को दिया जाता है, वह घूस नहीं, "मामूल" है। कामशास्त्री की सज़ा भी रद्द कर दी।

आरण्य काण्ड

पंचवटी में अपना आश्रम बनाकर, एक पर्णशाला में सीता, राम और लक्ष्मण सुखपूर्वक रह रहे थे।

हेमन्त ऋतु आयी। एक दिन वे सवेरे स्नान करने के लिए गोदावरी की ओर इधर उधर की बातें करते जा रहे थे।

बातों बातों में लक्ष्मण ने भरत की प्रशंसा की और कहा कि ऐसे की माता होकर भी कैकेयी ने इतना बुरा काम किया। उसने कैकेयी को खूब बुरा भला कहा।

राम ने उसको रोक कर कहा—"कैकेयी को बुरा भला कहना छोड़ दो और भरत के बारे में ही बात करो।"

राम ने सोचा कि मैं न मालूम कब भरत और शत्रुघ्न और लक्ष्मण के साथ राज्य कर सकूँगा।

जब वे तीनों गोदावरी में स्नान करके आश्रम में आये और प्रातःकालीन कार्यों से निवृत्त होकर, पर्णशाला में बैठे थे कि उस तरफ़ एक राक्षसी आयी। वह रावण की छोटी बहिन सूर्पनखा थी। उसका चेहरा बड़ा भद्दा था, बड़ा-सा पेट था। लाल लाल बाल थे। भयंकर आवाज़ थी। आयु भी अधिक थी।

वह राम को देखते ही उन पर मुग्ध हो गई। उसने राम को सम्बोधित करके कहा—"देखने में तो मुनि मालूम होते हो, मगर साथ हथियार हैं। पत्नी है। तुम हम राक्षसों के देश में कैसे आये!"

राम ने अच्छी तरह उसको अपना वास्तविक वृत्तान्त सुनाया। उन्होंने सीता के बारे में भी बताया। फिर उन्होंने पूछा—"आखिर तुम कौन हो? किसकी लड़की हो!"

"मेरा नाम सूर्पनखा है। सुन्दरी हूँ। अकेले सारे जंगल में घूमती रहती हूँ। तुमने रावण का नाम सुना ही होगा। बड़ा पराक्रमी है। विश्रवसु का लड़का है। राक्षसों का राजा है। वह मेरा भाई है। हमेशा सोनेवाला कुम्भकर्ण भी मेरा भाई है। विभीषण भी होने को मेरा भाई है, पर उसमें राक्षस लक्षण नहीं हैं। महा पराक्रमी खर और दूषण भी मेरे भाई हैं। तुम्हें देखते ही मैं अपने सब लोगों को छोड़-छाड़कर, तुम्हारी पत्नी हो जाना चाहती हूँ। मैं शक्तिशालिनी हूँ। तुम इस सीता को छोड़कर मुझसे शादी कर लो। यह बड़ी बदसूरत है, तुम्हारे योग्य नहीं है। हम दोनों की अच्छी जोड़ी रहेगी। हम दोनों मज़े से इस दन्डकारण्य में घूमेंगे फिरेंगे।" राक्षसी ने कहा।

राम ने सूर्पनखा से कहा—"मेरी एक पत्नी है ही। मुझे अपनी पत्नी बहुत पसन्द भी है। तुम्हारे लिए किसी का सौत होना भी अच्छा नहीं मालूम होता। इसे देखो, यह मेरा भाई है। सुन्दर है। पराक्रमी है। साथ पत्नी भी नहीं लाया है। यदि तुमने इससे विवाह कर लिया, तो तुम्हें सौत के साथ रहने की भी नौबत न आयेगी।"

सूर्पनखा तुरत राम को छोड़कर, लक्ष्मण के पास गई। उससे भी उसने कहा कि वह उसकी पत्नी होना चाहती थी।

लक्ष्मण ने हँसते हुए कहा—"तुम तो बड़ी नाजुक हो। मैं एक सेवक की तरह ही रह रहा हूँ। यदि तुमने मेरे साथ विवाह किया तो तुम भी दासी बनोगी। मेरे मालिक राम हैं। अच्छा है कि तुम उनकी दूसरी पत्नी बन जाओ। तुम जैसी सुन्दरी से विवाह करके राम अपनी पहिली पत्नी को छोड़ देंगे, क्योंकि वह बदसूरत है। बूढ़ी है।"

सूर्पनखा यह न जान सकी कि राम और लक्ष्मण उसका परिहास कर रहे थे। उसने राम के पास आकर कहा—"तुम इस बूढ़ी बदसूरत स्त्री से शादी करके मुझे दुत्कार रहे हो। मैं इसे अभी निगल जाती हूँ। इसके बाद बिना सौत के हम दोनों सुख से रह सकेंगे।" यह कहकर वह सीता की ओर मुख फाड़कर लपकी। सीता जब भागीं, सूर्पनखा भी उनका पीछा चिल्ला चिल्लाकर करने लगी।

राम ने लक्ष्मण से कहा—"देखा, दुष्टों से मज़ाक करना भी कितना खतरनाक है! सीता पर आपत्ति न आने दो। इस सूर्पनखा को अंगहीन कर दो।"

लक्ष्मण ने राम के पास पड़ी तलवार उठायी और सूर्पनखा की नाक और कान काट दिये। सूर्पनखा ज़ोर से चिल्लाई और जिस रास्ते आयी थी, उसी रास्ते कुदती कुदती चली गई।

जनस्थान में जहाँ खर, अनेक राक्षसों के साथ बैठा था, सूर्पनखा खून बहाती गई और वहाँ ज़मीन पर गिर पड़ी।

सूर्पनखा को उस विकृत रूप में घायल देख, खर ने कहा—"मुझे देखकर, तो

तीनों लोकवाले डरते हैं। तेरी यह हालत करके कौन अपनी मौत ख्वाहम ख्वाह मोल ले रहा है?"

सूर्पनखा ने उससे सीता, राम और लक्ष्मण के बारे में कहा और यह भी बताया कि कैसे उन्होंने उसका अपमान किया था।

फिर उसने कहा—"यदि तुम तीनों को मारकर उनका खून लाये, तो मैं उसे पीना चाहूँगी। यही मेरी एक इच्छा है।"

खर ने अपने आदमियों में से चौदह आदमियों को चुना—"तुम जाकर, सूर्पनखा जिन तीनों को बता रही है, उनको मार दो—उनका खून लाकर दो।

वे सूर्पनखा को साथ लेकर राम की पर्णशाला में आये। सूर्पनखा ने सीता, राम और लक्ष्मण को दिखाकर कहा—"इन तीनों को तुरत मार दो।"

उन सब को हथियारों के साथ आया देख, राम ने लक्ष्मण से कहा—"मैं इनकी खबर लेता हूँ। तुम सीता के साथ रहो। उनकी रक्षा करो।"

उन्होंने राक्षसों के सामने आकर कहा—"क्यों तुम सब मुझ पर आक्रमण करने आये हो। यहाँ, मुनियों की राक्षसों से रक्षा करने के लिए, मैंने धनुष और बाण रख रखे हैं। यदि तुम चाहते हो कि मेरे हाथ न मारे जाओ, तो तुरत चले जाओ। सावधान।"

राक्षस ये बातें सुन गरमाये। "तुमने हमारे सरदार खर को क्रुद्ध किया है। हम तुम्हें मारने के लिए आये हैं। हम बहुत से हैं और तुम अकेले हो। इसलिए तुम्हारी मौत होकर रहेगी।" कहकर, चौदह आदमियों ने अपने अपने हाथों के भाले राम पर फेंके।

राम ने चौदह बाणों से उन भालों को बीच में ही काट दिया। फिर उन्हें उठाकर उसने राक्षसों पर फेंका, वे सब गिरकर वहीं मर गये।

यह देख सूर्पनखा डर गई। चीखती चिल्लाती, फिर खर के पास जा गिर पड़ी। खर ने उसको देखकर झुंझलाते हुए कहा— "क्यों अब रो रही हो! अभी ही तो चौदह आदमियों को तुम्हारा काम कर आने के लिए भेजा था। वे अजेय हैं। बलवान हैं।"

"तुमने भेजे तो थे पर वे सब राम के हाथ मारे भी गये हैं। मैं रो इसलिए रही हूँ, क्योंकि मैं बहुत डर गई हूँ। वह राम साधारण व्यक्ति नहीं है। वह और लक्ष्मण बड़े पराक्रमी हैं। यदि तुम मेरा और उन लोगों का, जिनको तुमने भेजा था, बदला लेना चाहते हो, तो तुम स्वयं जाकर, उस राम को मारो। यदि तुमने यह न किया, तो तुम्हारी वीरता केवल ढोंग ही है। तुम जनस्थान में भी रहने योग्य नहीं हो। क्योंकि कभी न कभी, वह राम आकर, तुम्हारे प्राण लेकर रहेगा और अगर तुम यह कहते हो कि तुम भी राम के बराबर बलवान हो, तो तुरत जाकर तुम उसे मार दो। नहीं मार सकते हो, तो खुद मरो।" कहकर सूर्पनखा ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

सूर्पनखा ने जब और राक्षसों के सामने उसका यों अपमान किया, तो खर उबल उठा—"मुझे राम के पराक्रम की क्या परवाह है। तुम्हारा अपमान देखकर, मुझे बड़ा गुस्सा आ रहा है। मैं, उस राम और लक्ष्मण को स्वयं मार दूँगा। तुम उनका खून पीना।" खर ने कहा।

खर के पास चौदह हज़ार राक्षसों की एक सेना थी। उसका सरदार था

दूषण। उसने उस सेना को सावधान किया। खर रथ पर सवार होकर सेना के साथ राम पर हमला करने के लिए निकला। खर के साथ बारह राक्षस प्रमुख थे और दूषण के साथ चार और सेनापति थे।

यह देख कि उन पर राक्षसों की एक बड़ी सेना आक्रमण करने आ रही थी, राम ने सीता को लक्ष्मण के साथ एक गुफ़ा में भेज दिया। उनके चले जाने के बाद राम कवच पहिनकर, राक्षसों की प्रतीक्षा करने लगे।

इतने में शोर करती, भेरियाँ बजाती, जंगल में हो हल्ला करती, राक्षसों की सेना आ ही पहुँची। राम को सब तरफ़ राक्षस ही राक्षस दिखाई दिये। खर का रथ राम की पर्णशाला के पास आकर रुका। राक्षसों ने राम पर बाण वर्षा की। उनमें से कुछ को राम ने अपने बाणों से मार दिया। परन्तु राक्षसों ने भी राम को घायल कर दिया। फिर भी वे पर्वत की तरह खड़े रहे और इधर राम के बाणों से राक्षस मरने लगे।

जब बहुत से राक्षस मारे गये, तो और राक्षस डरकर भागे-भागे खर के पास आये। दूषण उनको ढाढ़स देकर राम पर हमला करने आया। राम ने दूषण पर और उनके साथ आये हुए राक्षसों पर गन्धर्वास्त्र का उपयोग किया। हज़ारों बाण राक्षसों पर लगे और वे मारे गये। राम और दूषण का युद्ध होने लगा। युद्ध में राम ने दूषण के सारथी को, घोड़ों को, आखिर दूषण के दोनों हाथों को बाणों से काट दिया। दूषण के साथ जो पाँच हज़ार राक्षस आये थे, उन सब को मार दिया।

राम यद्यपि अकेले थे, उन्होंने चौदह हजार राक्षसों को मार दिया। उनमें खर और त्रिशुर नामक राक्षस ही शेष रह गये। खर के क्रोध की सीमा न थी। उसको राम पर हमला करने आता देख, त्रिशुर ने रोक कर कहा—"राम को मैं मार दूँगा। तुम देखते रहो। यदि राम ही मुझे मार दें, तो तुम उसे बाद में मार देना।" खर यह बात मान गया।

त्रिशुर और राम का भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में त्रिशुर अपने घोड़े और सारथी और ध्वजा को खो बैठा और छाती पर बाण लगने के कारण मूर्छित हो गया। उस स्थिति में राम ने तीन बाण छोड़कर, त्रिशुर का सिर काट दिया।

फिर राम और खर का युद्ध हुआ। खर ने राम के बाण ही न तोड़े, बल्कि उनके कवच के भी टुकड़े-टुकड़े कर दिये और उनके मर्मस्थल को बाणों से बींध दिया। राम का खून बहने लगा। तब उन्होंने अगस्त्य को दिये हुए भयंकर बाणों का उपयोग किया और खर को विरथ कर दिया। खर ने अपनी गदा राम पर फेंकी। जब वह राम के बाणों से टुकड़े-टुकड़े हो गयी, तो उसने पास के पेड़ को उखाड़कर राम पर फेंका। राम ने उसको भी अपने बाणों से ध्वंस कर दिया। फिर खर को एक क्षण में उन्होंने मार दिया।

राम ने जब खर, दूषण और चौदह हजार राक्षसों को मार दिया, तो दन्डकारण्य में राक्षसों का भय जाता रहा। यह देख कि युद्ध समाप्त हो गया था, सीता गुफा से बाहर निकलीं और राम का ज़ोर से आलिंगन किया। वे बड़ी सन्तुष्ट हुई।

१२. अंगकोर ताम

कम्बोडिया में यह प्राचीन हिन्दू नगर है। ८६० ई. सी. में इसका निर्माण प्रारम्भ हुआ और ४० साल तक चलता रहा। इसमें बहुत-से राजभवन हैं, मन्दिर भी हैं। नगर के मध्य में बयान मन्दिर में, दीवारों पर चारों ओर शिव की मूर्तियाँ ध्यान मुद्रा में बनी हैं। नगर के बाहर ३३० फीट की खाई है।
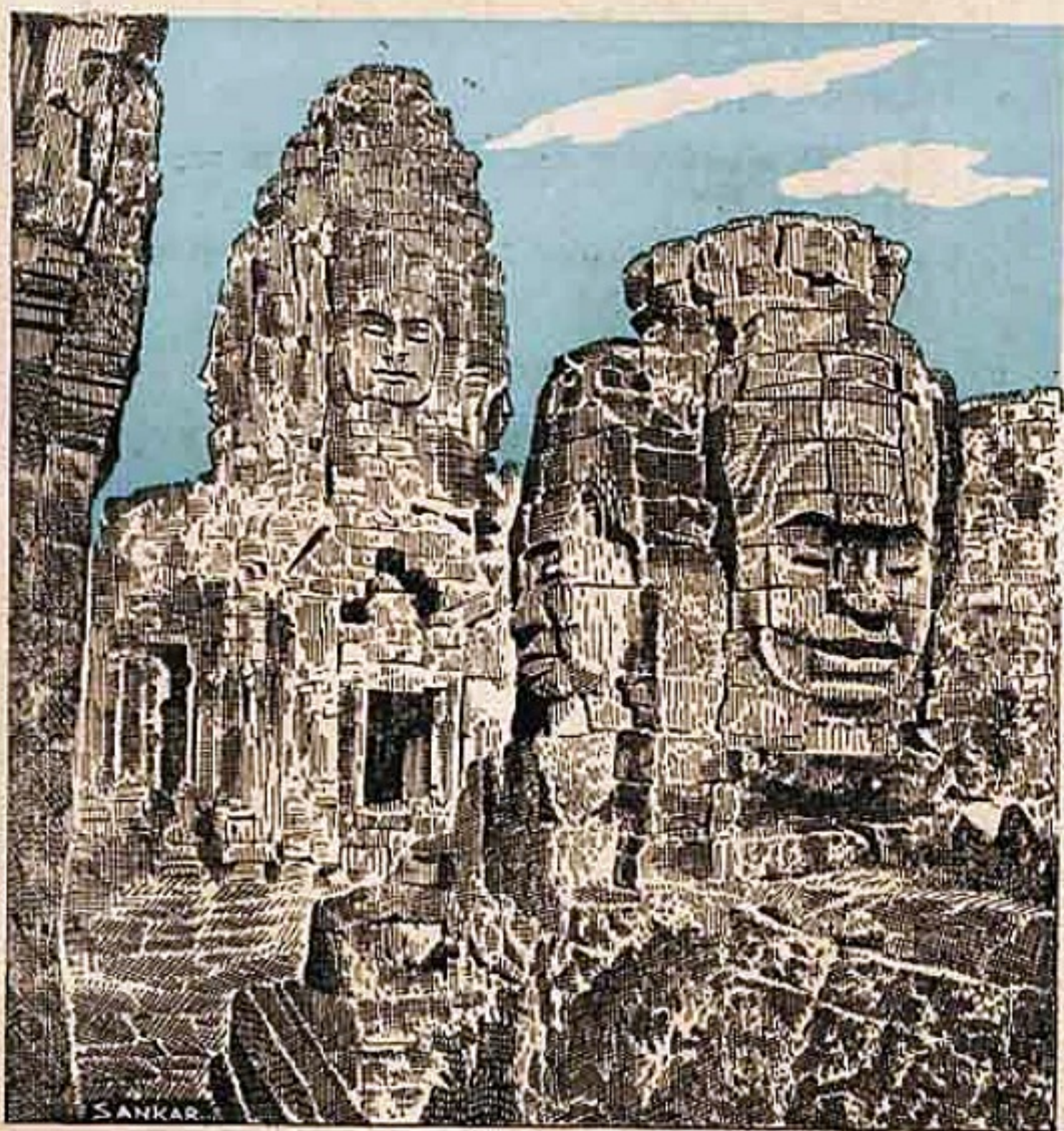
१. **गिरीशचन्द्र सुमन, अलीगढ़**

यदि फोटो परिचयोक्ति के लिए कोई फोटो भेजूं तो आप कितने दिन बाद छापेंगे?

बिना फोटो देखे हम कैसे कह सकते हैं और फिर हमारे पास इतने फोटो जमा हैं कि उनको ही मुश्किल से छाप पा रहे हैं।

२. **जगन्नाथ अग्रवाल, रामसिंह नगर**

क्या "चन्दामामा" में धारावाहिक रूप से प्रकाशित "रूपधर की यात्रायें" पुस्तकाकार में मिल सकती है?

नहीं।

क्या आप "चन्दामामा" में अक्षरों का टाईप छोटा नहीं कर सकते?

नहीं भाई, और चाहते हैं कि यह टाईप इतना ही बड़ा रहे।

३. **प्रकाशचन्द्र जैन, आन्डरसनपेट**

क्या "भयंकर घाटी" नामक कहानी पुराने जमाने में सची बीती थी?

नहीं भाई, यह कहानी है। ऐतिहासिक घटना नहीं।

४. **शफी उद्दीन, जोधपुर**

क्या "चित्रा" और "शंकर" आपके स्थाई चित्रकार हैं?

हाँ।

५. श्याम मनोहर तिवारी, झरसुगुड़ा

आप कैसे प्रश्न का उत्तर देते है ?

यदि आप हमारे पाठक हैं, तो आप इस स्तम्भ से जान ही सकते हैं कि हम कैसे प्रश्नों का उत्तर देते हैं।

६. शिवकान्त शंकरलाल परतानी, बीजापुर

"चन्दामामा" के अलाया आप कौन कौन-सी कितायें छापते हो ?

दो चार छापी हैं, जैसे "विचित्र जुड़वा" मगर कोई और पत्र पत्रिकायें तो नहीं छापते।

७. वीरसिंह "स्वांग" जमशेदपुर

आप "चन्दामामा" में "विचित्र जुड़वा" का विज्ञापन क्यों नहीं देते ?

बिना विज्ञापन के ही बिक रही हैं, फिर क्यों "चन्दामामा" का स्थान लिया जाये !

८. बद्रीनारायण जहेना, जेसलमेर

क्या हम एक प्रश्न के साथ दूसरा प्रश्न भेज सकते हैं ?

हाँ।

९. मोहम्मद इकबाल, पडेर

आप बेताल कथायें कब खतम करेंगे ?

ऊब गये हैं ! या यह डर है कि कहीं ये खतम न हो जायें।

१० रेनुमसीन, करोलबाग, दिल्ली

आपके "प्रश्नोत्तर" और "पाठकों के मत" का क्या पता है।

वही, जो "चन्दामामा" का है, पर पते पर जिस किसी स्तम्भ के लिए आप लिख रहे हों, वह भी लिखिये।

Photo by Subhash Varma
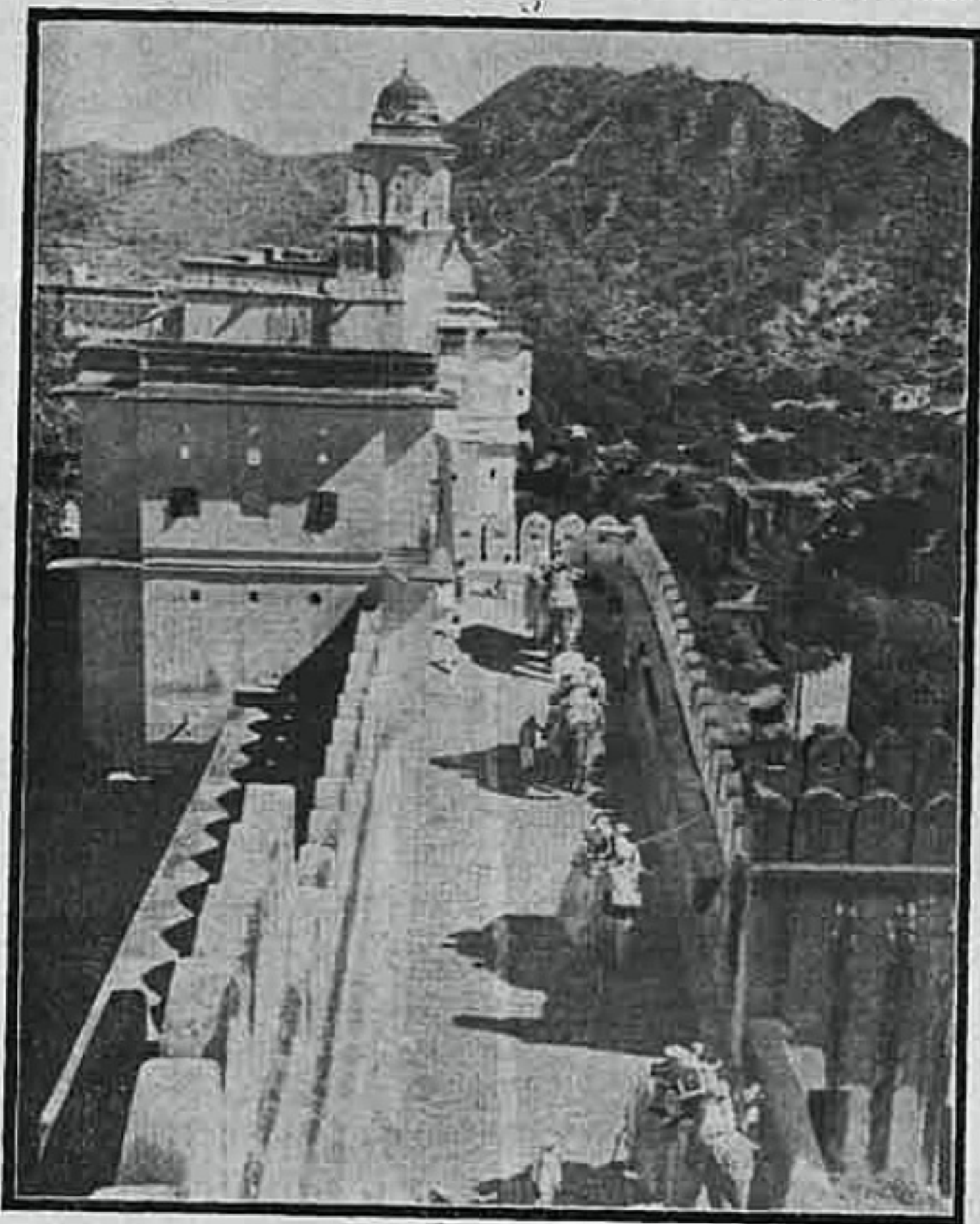
पुरस्कृत परिचयोक्ति

किले की सैर हाथी पर!

प्रेषक: दद्दूलाल पोद्दार-भरतपुर

Photo by B. A. Kadne

पुरस्कृत परिचयोक्ति

नदी की सैर नाव पर!!

प्रेषक:
उद्धवलाल पोद्दार-भरतपुर

सच और छाया ★

[रामतीर्थ कथा]

एक बच्चे ने तभी-तभी रेंगना सीखा था। एक बार इस बच्चे ने अपनी परिछाई कहीं देखी। उसे वह परिछाई बड़ी अजीब-सी लगी। उस परछाई को पकड़ने के लिए वह आगे रेंगा, तो उसकी परिछाई भी उसके साथ साथ बढ़ी।

इस तरह बहुत मेहनत करने पर भी बच्चे को छाया न मिली। जब उस छाया से खेलने के प्रयत्न में वह असफल रहा, तो बच्चा रोने लगा।

रोते रोते वह उस छाया को पकड़ने के लिए न जाने क्या करता रहा।

बच्चे की दुस्थिति देखकर, बच्चे की माँ ने उससे अपना सिर पकड़वाया। बच्चे ने अपना सिर पकड़कर, छाया की ओर देखा।

इस तरह बच्चे को छाया मिल गई। बच्चा सन्तोष से खूब हँसा। माँ भी उसके साथ हँसी।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

फरवरी १९६२ :: पारितोषिक १०)
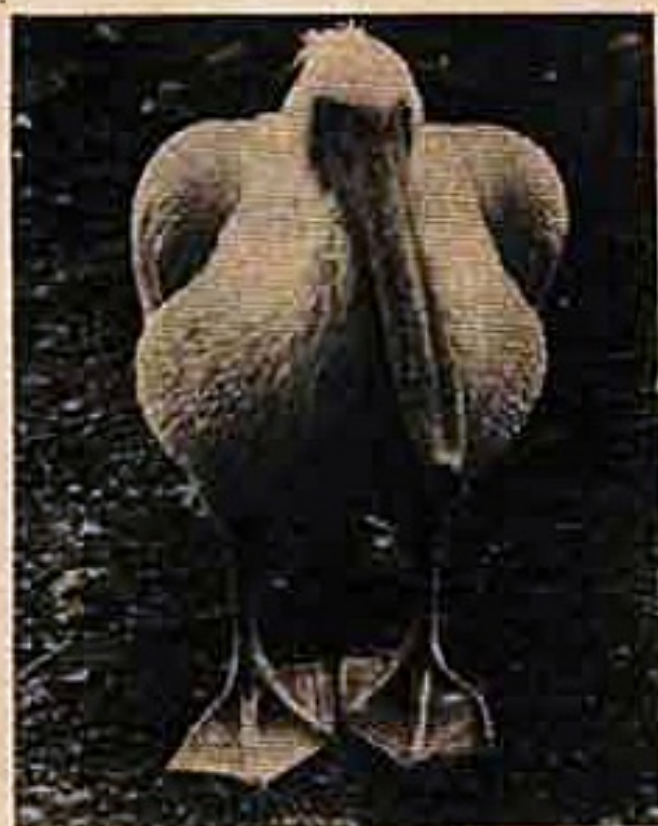
कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ दिसम्बर १९६२ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वडपलनी, मद्रास-२६

दिसम्बर – प्रतियोगिता – फल

दिसम्बर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **किले की सैर हाथी पर!**

दूसरा फ़ोटो : **नदी की सैर नाव पर!!**

प्रेषक : **उखयलाल पोद्दार,**

भरतपुर जिला खादी ग्रामोद्योग समिति, पो. भरतपुर (राजस्थान)

अन्तिम पृष्ठ

युधिष्ठिर का पट्टाभिषेक यथाविधि सम्पन्न हुआ। धृतराष्ट्र ने अपने लड़कों का श्राद्ध किया। युधिष्ठिर ने द्रोण, कर्ण, घटोत्कच, अभिमन्यु, विराट आदि बन्धु मित्रों का अलग-अलग श्राद्ध किया। उसने आज्ञा दी कि जो जो उसके लिए मरे थे, उनके नाम पर धर्मशालायें तालाब आदि बनाये जायें।

उसने भीम को दुर्योधन का सिर, अर्जुन को दुश्शासन का, नकुल और सहदेव को, दुर्मर्षण और दुर्मुख के सिर दिये। कृष्ण और सात्यकी अर्जुन के घर ही रह गये।

एक दिन युधिष्ठिर कृष्ण को देखने गया। कृष्ण मणि मन्डित शैय्या पर थे। युधिष्ठिर के कुशल प्रश्नों का उन्होंने उत्तर न दिया। युधिष्ठिर घबराया।

इतने में कृष्ण इस तरह उठे, जैसे समाधि से उठे हो—"घबरा मत। भीष्म मुझे याद कर रहे हैं। मेरा मन उनके पास गया हुआ था। भीष्म के साथ कितने ही ज्ञान नष्ट होने जा रहे हैं। अच्छा है कि तुम उनके पास जाकर अपने सन्देहों का निवारण करो।"

फिर कृष्ण, सात्यकी, पाण्डव, संजय आदि भीष्म के पास आने के लिए निकले। रास्ते में पाँच पोखर थे। उनको परशुराम ने क्षत्रियों के रक्त से भर दिया था। उनकी कथा युधिष्ठिर ने कृष्ण से सुनी।

परशुराम जमदग्नि का लड़का था। गन्धमादन पर्वत पर उसने शिव की अराधना की। उनसे बहुत-से अस्त्र-फरसा आदि वर में पाये।

उन्हीं दिनों हैहय वंश के कृतवीर्य के अर्जुन नाम का लड़का हुआ। वह बड़ा बलवान था। अश्वमेध यज्ञ करके, उसने सबको दान दिये। इस अर्जुन के लड़के जमदग्नि और परशुराम की अनुपस्थिति में उनके आश्रम से होमधेनु और बछड़े को उठाकर ले गये। परशुराम ने आकर बदले में अर्जुन की हत्या करदी।

इनमें शत्रुता कम न हुई। अर्जुन के लड़कों ने जमदग्नि के आश्रम में आकर जमदग्नि का सिर काट डाला।

इस पर परशुराम ने प्रतिज्ञा की कि वह भूमि पर किसी क्षत्रिय को न रहने देगा। उसने इक्कीस बार क्षत्रियों को पराजित किया और सारी भूमि कश्यप को दान में दे दी। कुछ दिन ब्राह्मणों ने भूमि पर शासन किया। उनके शासन के कारण अराजकता फैल गई। कश्यप ने यह देख, उन क्षत्रिय राजकुमारों को फिर राज्य सौंप दिया, जो परशुराम द्वारा नहीं मारे गये थे।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

डाबर
(डा. एस. के. बर्मन)
प्राइवेट लि०
कलकत्ता
लालशर
(डाबर-बालामृत)
कैल्सियम
सोडियम
जिंजर या अदरक
व
डिल या मधुरिका
का
स्निग्ध-सार
आदि पदार्थ
इस मीठी
'पुष्टई' में
बच्चों को
सुलभ हैं
खेलने-खाने की
उम्र है इनकी,
ये ही तो परिवार
और राष्ट्र के भावी
कर्णधार हैं।
इनके स्वास्थ्य और
शक्ति के लिये
डाबर का
उत्तम
बालामृत

एक दुनिया जानती है...

नाग ज्योति

आंखों की ज्योति को बढ़ाता है चश्मा लगाने की आदत को दूर करता है और आंखों को नीरोग बनाये रखता है।

पोस्टेज सहित मूल्य केवल रु. ६.२५ न. पै.

मुरारी ब्रदर्स, कमला नगर, देहली-६

अमरज्योति फेब्रिक्स

AMARJOTHI
FABRICS

हातकरघे के बेडशीटस् के लिए मशहूर है

बेडशीटस्, पर्दों के कापड, तौलिये आदि

संसार में सर्वत्र इनका निर्यात होता है

शाखाएँ :

बम्बई,

दिल्ली,

मद्रास

निर्माता : अमर ज्योति फेब्रिक्स

पो. बोक्स नं. २२, करूर (दक्षिण भारत)

मद्रास की गवर्नमेन्ट से प्रथम पुरस्कार प्राप्त

आधुनिक जीवन के उधेड़-बुन में पुरुषों और महिलाओं का सच्चा दोस्त च्यूइंग गम ही है, जिसे चबाकर वे एकाकीपन, तनाव, मायूसी, गुस्सा और चिड़चिड़ापन भूल जाते हैं। काम से कितने ही उब क्यों न गये हों, च्यूइंग गम उनकी तबीयत को मस्त कर देता है।

अच्छे मिजाज का राज च्यूइंग गम चबाना है

स्वादिष्ट
और
मजेदार

यह ए. वन है, निश्चय ही, सबसे बढ़िया है

कलकत्ता कन्फेक्शनरी वर्क्स
बम्बई-१९

art-CC-HIN

पके बालों की चिंता ही न करें

जब आप केश तेल के रूप में

इस्तेमाल करते हो

चीफ एजेंटस और निर्यातक:
एम. एम. खम्भातवाला,
अहमदाबाद-१ (भारत)
एजेंटस:
सी. नरोत्तम एण्ड कंपनी, बम्बई-२

LIFEBUOY
SOAP

वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड लाल लेबल

खांसी, ज़ुकाम, इन्फ़्लूएंज़ा, कफ़-सम्बन्धी रोगों तथा दमा के लिए लाभदायक है।

यह सिर्फ़ दवाई ही नही बल्कि एक विश्वसनीय टॉनिक भी है।

आजमाये हुए नियमों के अनुसार बनाया गया वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड ऐसा विश्वसनीय टॉनिक है जिसकी सिफारिश डॉक्टर बहुधा करते हैं।

दवाई के रूपमें:
वॉटरबरीज़ कम्पाउन्ड में क्रिओसोट और गॉयकॉल नामक पदार्थ मिले हुए होते हैं जो बलग़म का नाश करके फेफड़ों को साफ़ रखते हैं... खांसी और ज़ुकाम से भी छुटकारा दिलाते हैं।

टॉनिक के रूप में:
यह शरीर को शक्ति प्रदान करता है ताकि बीमारियों का सामना कर सके। इसके सेवन से भूख बढ़ती है, हाजमा सुधरता है और धातुओं की कमी पूरी होती है। यह खून बढ़ाता है।

WCRT-I HIN

वॉरनर लैम्बर्ट फ़ार्मास्युटिकल कम्पनी (सीमित दायित्व के साथ यू. एस. ए. में संस्थापित)

दिसम्बर १९६२

अक्तूबर का चन्दामामा पढ़ा। मुखपृष्ठ सुंदर था। नागमणि, सदुद्देश्य, चोर पकड़ा गया, मणि का माहात्म्य, वह विवाह जो न हुआ, श्रेष्ठ कहानियाँ थीं। "भयंकर घाटी" सुंदर धारावाहिक है। चन्दामामा ही वह अनमोल मोती है जो हमारी सारी ज़रूरतें पूरी करता है। आशा है, आप हमेशा इसी तरह की कहानियाँ छापेंगे।

हरीसिंह राणा, बम्बई

"चन्दामामा" में आप ज़रा "चुटकुले" तथा हास्य कार्टून देते तो यह पत्रिका और सुन्दर बन जाती। इस पत्रिका का स्थान मेरी समझ में अन्य हिन्दी मासिक-पत्रिकाओं से ऊँचा स्थान है।

कुमारी कृष्णा, दिलदार नगर

मेरी शाला में भी "चन्दामामा" ने स्थान पा लिया है। इसमें प्रकाशित सभी सामग्री पाठकों के लिए उत्तम है। तथापि बाल कविताओं के अभाव से नन्हे-मुन्नों का दिल टूट जाता है, पर इसके सुन्दर सचित्र व अच्छे कागज पर बढ़िया प्रकाशन को देखकर वे पुनः मनमुग्ध हो जाते हैं। आशा है बाल उत्साह को प्रोत्साहन देंगे।

चिमनलाल 'चमन', कुशलगढ़

मैं सात साल से चन्दामामा पढ़ रहा हूँ। चन्दामामा भारत की सर्वोत्कृष्ट और सुन्दर पत्रिका है। इसके सुन्दर चित्र तथा कलात्मक छपाई सब का मन हर लेते हैं। यह पत्रिका बच्चों के लिए ही नहीं बूढ़ों के लिए भी है।

नवम्बर के दीपावली अंक में "सर्प-यज्ञ" नामक पुराण कथा मुझे बहुत अच्छी लगी।

जयसिंह राय निकम, उज्जैन